will hold up the working of the Institute, and may sometimes defeat the very object for which they are made.

Shri Narayanankutty Menon (Mukandapuram): He is prejudging the grounds on which the amendments are moved.

Mr. Chairman: Motion moved:

> "That the Bill to make provision for the regulation of the profession of cost and works accountants, as passed by Rajya Sabha, be taken into consideration."

17.02 hrs.

MOTION RE: REPORT OF SANSKRIT COMMISSION—*contd.*

Mr. Chairman: The House will now take up further consideration of the motion moved by Shri Supakar on the 5th May, 1959, namely:

> "That this House takes note of the Report of the Sanskrit Commission, 1956-57, laid on the Table of the House on the 28th November, 1958."

श्री नरदेव स्नातक (अलीगढ़) रक्षित, अनुसूचित जातियां) : सभापति महोदय संस्कृत आयोग की रिपोर्ट कल से हमारे इस सदन में चल रही है। ब्रह्मा से लेकर जैमिनी पर्यन्त जितने भी ऋषि और मुनि हुए हैं उन सब ने संस्कृत साहित्य को रच कर हमारे देश का ही नहीं अपितु सारे विश्व का बड़ा उपकार किया है। हमारा वैदिक वांङ्मय इतना उदात्त और उत्कृष्ट है कि आज विदेशी भी उसके ज्ञान और विज्ञान को पाने के लिए लालायित हैं। वेदों के सम्बन्ध में अपने देश के लोगों की अपेक्षा विदेशी लोगों ने अधिक जानकारी प्रस्तुत की है। दुर्भाग्य यह है कि आज उस संस्कृत भाषा को जो कि सारी भाषाओं की जननी है अपने देश के लोग इतना नहीं जानते जितना कि विदेशी जानते हैं। आज हमें आजाद हुए ११, १२ साल हो गये परन्तु फिर भी संस्कृत के सम्बन्ध में किसी प्रकार का न सरकार की तरफ से और न जनता की तरफ से प्रोत्साहन मिला है।

संस्कृत आयोग १ अक्तूबर सन् १९५६ को नियुक्त हुआ था और उसने देश के विभिन्न स्थानों का दौरा किया और बड़े परिश्रम के साथ उसने अपनी रिपोर्ट सदन के सामने प्रस्तुत की है। उस सारी रिपोर्ट को देखने के बाद हम यह कह सकते हैं कि आयोग के सदस्यों ने परिश्रम किया है और यह कोशिश की है कि संसद् के सदस्यों को और देश के लोगों को संस्कृत के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त हो।

आप जानते हैं कि दुनिया में संस्कृत के वांङ्मय की बड़ी महिमा है। मानव धर्म शास्त्र में उसके प्रणेता मनु महाराज ने ठीक ही कहा है.

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मन:
स्व स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्व मानवा :॥

सारे संसार के लोग हमारे देश में ज्ञान, विज्ञान और सभ्यता की दीक्षा लेने के लिए आते थे, परन्तु दुर्भाग्य है कि आज हम दूसरे देशों की तरफ जाने को लालायित हो रहे हैं और दूसरे देशों में जाकर वहां के ज्ञान. विज्ञान और आदर्शों की शिक्षा लेते हैं। आज विश्व बन्धुत्व के बारे में बड़ी बातें कहीं जाती हैं और बड़ी ऊंची कल्पनायें की जा रही हैं परन्तु हमारे यहां जो विश्व बन्धुत्व की भावना थी वह केवल मनुष्यों तक ही सीमित नहीं थी। पशुओं तक को उसमें सम्मिलित किया गया था।

द्विपदे सम् चतुष्पदे

अर्थात्, दो पैर वाले मनुष्य और चार पैर वाले जानवरों तक के कल्याण की कामना हमारे वेदों में की गयी है।

आप जानते हैं कि वेदों के तत्वज्ञान को और उपनिषदों के तत्वज्ञान को आज सारी दुनियां मान रही है। हमारे पूज्य बापू जी ने ईशोपनिषद के प्रथम मंत्र पर बहुत जोर

[श्री नरदेव स्नातक]

दिया है और कहा है कि अगर संसार का सारा साहित्य नष्ट हो जाये और ईशोपनिषद का केवल यह एक श्लोक

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंचि जगत्यां जगत
तेन त्यक्तेन भूजीथा मा गृधः कस्यस्विद धनम् ।।

शेष रह जाये तो फिर इसके ऊपर सारे साहित्य की इमारत खड़ी की जा सकती है। हमारा यह वेदों का और उपनिषदों का इतना उदात्त ज्ञान है इसके बारे में गांधी जी ही ने नहीं बल्कि शोपनहार और दारा शिकोह जैसे विदेशियो देशियो ने भी अपनी प्रशंसा व्यक्त की है और इसकी महिमा गाई है। उन्होंने उपनिषद के ज्ञान के सम्बन्ध में यह कहा है कि यह जीवन काल में तो शान्ति देता ही है, मरने के बाद परलोक में भी शान्ति देने वाला है। ऐसा है हमारे उपनिषणदो का तत्वज्ञान। और आगे चल कर उपनिषदों का मथन करके गीता के रूप में उसका नवनीत निकाला गया है जिसके बारे में कहा जाता है

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा, गोपालनन्दन

भगवान कृष्ण ने गीता का उपदेश देकर न केवल अपना नाम अमर किया है बल्कि हमारे देश का नाम अमर कर दिया है। जहा पश्चिमी तत्वज्ञान समाप्त होता है वहा से गीता का तत्वज्ञान प्रारम्भ होता है। बाइबिल को छोड़ कर गीता का अनुवाद संसार की सबसे ज्यादा भाषाओ में हो चुका है। इस ग्रन्थ का ससार में बड़ा आदर है। हमारे देश में तीन महाकवि हुए है। महर्षि बाल्मीकी, कृष्ण दवैपायन, वेदव्यास और महाकवि कालिदास, इन्होने सस्कृत साहित्य में जो कुछ निर्माण किया है वह आज ससार में आदर्श रूप में माना जाता है। इन महाकवियों ने भगवान राम और कृष्ण के सम्बन्ध में जो कुछ लिखा है उससे संसार में सस्कृत साहित्य और भारतीय सभ्यता का बड़ा आदर हुआ है। इस सम्बन्ध में मैं रामायण से एक श्लोक का उद्धरण देने में आनाकानी नहीं कर सकता। जिस समय भगवान राम ने रावण पर विजय प्राप्त की और जब रावण मारा गया तब लक्ष्मण जी बड़े खुश हुए और उन्होंने सोचा कि हमारे पिता ने तो हमें बनवास दिया, और अयोध्या से निकाल दिया, किन्तु आज रामचन्द्र जी न रावण को मारकर सोने की लंका जीत ली है। भगवान राम ने उनसे पूछा कि तुम इतने खुश क्यों हो तो लक्ष्मण जी ने उत्तर दिया कि आपने लंका को जीता है, आप इसके राजा बनेंगे और मैं आपका प्रधानमत्री या सेनापति बनूगा इसलिए मैं खुश हूं। उस समय भगवान राम ने कहा.

अपि स्वर्णमयी लका न मे लक्ष्मण रोचते
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ।।

उन्होंने कहा, लक्ष्मण यह सोने की लका मुझे वैसी अच्छी नही लगती जितनी कि मुझे अपनी माता कौशल्या और जन्मभूमि अयोध्या अच्छी लगती है, यह दोनों तो मुझे स्वर्ग से भी अधिक अच्छी लगती है। इतने उत्कृष्ट उदाहरण हमको अपने संस्कृत साहित्य में मिलते है।

इससे भी आगे चल कर महाकवि भवभूति ने अपने प्रसिद्ध उत्तर रामचरित्र नामक नाटक में राम के बारे में एक श्लोक कहा है.

स्नेह दया च सौख्य च यदवा जानकीमपि,
आराधनाय लोकस्य मुंचन्तो नास्ति मे व्यथा।।

भगवान राम कहते है कि स्नेह, दया और सुख यह तो कोई चीज नही है, प्राण प्यारी महारानी सीता को भी यदि छोड़ना पड़े तो मैं जनता के अनुरंजन के लिए छोड़ने में कोई आपत्ति नही करूंगा।

Mr. Chairman: Members go on reciting *slokas* from Mahabharata and Ramayana. There is no end to it. The 2½ hours fixed for this discussion are now practically over. We have carri-

ed over the discussion to today for further discussion Even at present, there are 13 Members who are very eager to speak. I do not know how I could accommodate them. So I would request hon Members not to exceed in any case 15 minutes I hope they will try to finish in 10 minutes It is the Report of the Sanskrit Commission that is under discussion, not Mahabharata or Ramayana or Gita

Shri D C. Sharma (Gurdaspur): We are saying very interesting things.

Mr Chairman: We propose to sit up to 6 P M

Shri Radhelal Vyas (Ujjain) It was decided that we would sit till 6 30 P M

Mr. Chairman: All right But Members should be brief Also, may I know from the Minister how much time he wants?

Shri Narayanankutty Menon (Mukandapuram) He agrees with all these things

The Minister of Education (Dr. K. L. Shrimali): I will need at least 15—20 minutes

Mr. Chairman: So let there be ten minutes for each Member Shri Nardeo Snatak should conclude now

श्री नरदेव स्नातक सभापति महोदय, मैं अपने इन उद्धरणो के द्वारा यह बताने का प्रयत्न कर रहा था कि जिस सस्कृत भाषा को देश के लोग और दूसरे लोग भी मृतप्राय समझते है, वह सारी भाषाओ की जननी है। वह मा है, और प्रान्तीय भाषायें (रिजनल लैग्वेजिज) उससे निकली हुई हैं, भारत की चौदह भाषायें जिसे विधान ने स्वीकार किया है उससे निकली हुई है। हमको सस्कृत साहित्य को, और इसके गौरव को अक्षुण्ण रखना है। इसलिए मैं यह कहना चाहता हू कि सस्कृत के ज्ञान के सम्बन्ध में सरकार की जो विचारधारा है, वह ठीक भी नही है और उसका उसकी तरफ बहुत अधिक ध्यान भी नही है। आयोग ने यह सिफारिश की है कि यदि हमारी राष्ट्र-भाषा सस्कृत बना दी जाये, तो इसमें कोई आपत्ति नही है। मैं इसको बहुत अच्छा समझता हू और यह ठीक भी है। परन्तु हम देखते है कि हमारे देश में सस्कृत को समझने वाले बहुत थोडे लोग है। यद्यपि यह गौरव का स्थान सस्कृत को मिलना चाहिए था क्योकि यह सब की मा है इसलिए मेरा सुझाव यह है कि सस्कृत की शिक्षा के सम्बन्ध में आयोग ने जो सिफारिशें की है, वे मान्य समझी जाये परन्तु सस्कृत राष्ट्रभाषा नहीं होनी चाहिये और मेरा निवेदन है कि कम से कम हाई स्कूल के विद्यार्थियो के लिए सस्कृत की शिक्षा कम्पलसरी कर दी जाये। बिना सस्कृत को पढे हुए हम प्रान्तीय भाषाओ की ज्यादा जानकारी प्राप्त नही कर सकते है। आप जानते है कि आज हमारे इस शासन के काम को चलाने के लिए एक विदेशी भाषा का आश्रय लिया जा रहा है। हमारी प्रान्तीय भाषायें भी फल फल रही है, लेकिन सस्कृत भाषा, जो सबकी मा है, की तरफ कोई ध्यान नही दिया जा रहा है।

मैं मत्री महोदय से यह कहना चाहता हू कि जितने हमारे गुरुकुल, विद्यापीठ और सस्कृत पढ़ाने वाली पाठशालायें है, उनको अभी तक किसी प्रकार से आर्थिक सहायता नही दी गई है। अग्रेजी राज्य से उनको आर्थिक सहायता नही मिल रही थी। परन्तु जब अपना राज्य हो गया, स्वराज्य हो गया, तो इन सस्थाओ को आशा थी कि हम को सरकार की तरफ से आर्थिक सहायता मिलेगी, परन्तु दुर्भाग्य है कि अभी तक कुछ नही मिला है। आप जानते हैं कि हमारे हिन्दुस्तान के तीन बडे बडे गुरुकुल हैं—गुरुकुल कांगडी, गुरुकुल वृन्दावन और महाविद्यालय, ज्वालापुर—

[श्री नरदेव स्नातक]

जो कि संस्कृत शिक्षा का प्रसार और विस्तार कर रहे हैं। उन्होंने अंग्रेजी राज्य में आर्थिक सहायता नहीं ली। उन्होंने भीख मांग मांग कर एक एक पैसा इकट्ठा कर के यह कोशिश की कि इन संस्थाओं को चालू रखा जाय और संस्कृत विद्या का प्रचार और विस्तार किया जाये। अंग्रेजी राज्य में जितनी बुरी हालत थी, उससे कहीं अधिक बुरी हालत आज है।

डा० का० ला० श्रीमाली : यह बात सही नहीं है। गुरुकुल को हम काफी अरसे से सहायता दे रहे हैं और गुरुकुल महाविद्यालय के बारे में हम विचार कर रहे हैं और बराबर इस बात की कोशिश की जा रही है कि जितने भी गुरुकुल है, उनका समर्थन कर सकें और उनकी सहायता कर सकें।

श्री नरदेव स्नातक : मंत्री जी ने अभी कहा है कि गुरुकुलों के सम्बन्ध में सरकार ध्यान दे रही है और उनकी आर्थिक सहायता कर रही है। मैं मंत्री जी का बहुत बहुत धन्यवाद करता हू। मैं फिर यह प्रार्थना करूंगा कि इन संस्थाओं को जितनी आर्थिक सहायता दी जा सके वह दी जाये।

आयोग ने इतना परिश्रम कर के जो रिपोर्ट संसद् के सामने पेश की है, उसके लिए मैं उनका धन्यवाद और साधुवाद करता हूं और यह आशा करता हू कि संस्कृत को मृत-प्राय या मरी हुई भाषा न समझा जाय, अपितु इसको सबसे ऊंचा स्थान देना चाहिए। इसी में हमारा अपना कल्याण, देश का कल्याण और अपनी संस्कृति और सभ्यता का कल्याण है। मुझे आपसे इतना ही निवेदन करना है।

श्रीमती लक्ष्मीबाई (बिकाराबाद): सभापति महोदय, मुझ को मौका दीजिए। अभी तक कोई बहन नहीं बोली है।

श्री बाजपेयी (बलरामपुर): रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातं
भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पंकजश्रीः।
इत्थं विचिन्तयति कोशगते द्विरेफे
हा हन्त हन्त नलिनीं गज उज्जहार॥

यह श्लोक संस्कृत आयोग ने अपने प्रतिवेदन में प्रस्तुत किया है उन देशवासियों की व्यथा को प्रकट करने के लिए, जो स्वतंत्रता के आगमन के पश्चात् भी अपनी भाषा और अपनी संस्कृति के विकास के चरम स्वप्न को चरितार्थ देखने में असफल रहे है। स्वतंत्रता के पश्चात् इस बात की आशा की जाती थी कि जिस "स्व" का साक्षात्कार संस्कृत भाषा के माध्यम से सर्वोत्तम ढंग से हो सकता है, उसकी व्यवस्था की जायगी। संस्कृत हमारी परम्परा का पवित्र तम प्रवाह है, राष्ट्रीय ज्ञान की कुंजी है, भारती संस्कृति का अजस्र स्रोत है। संस्कृत की प्रशंसा में जो कुछ भी कहा जाय, थोड़ा है। जो संस्कृत की प्रशंसा करते है, मैं समझा हूं कि वे स्वयं अपना सम्मान बढाते हैं—संस्कृत भाषा का सम्मान नही बढ़ाते, क्योंकि उसका सम्मान तो स्वयंसिद्ध है। किन्तु प्रश्न यह है कि सस्कृत भाषा के पठन–पाठन के लिए, उसके प्रचलन के लिए, हम इस समय क्या प्रयत्न कर रहे हैं। आयोग ने इस बात की सिफारिश की है कि संस्कृत भाषा को माध्यमिक स्तर पर अनिवार्य भाषा के रूप मे पढ़ाया जाये। एक संशोधन द्वारा मैंने भी इस प्रकार की माग रखी है, किन्तु मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूं कि मैं संस्कृत आयोग के इस सुझाव से सहमत नहीं हूं कि संस्कृत को अनिवार्य किया जाये, किन्तु अंग्रेजी को उससे पहला स्थान दिया जाये। संस्कृत आयोग के प्रतिवेदन में हिन्दी को पीछा स्थान देने की जो प्रवृत्ति दिखाई देती है, उससे मैं सहमत नही हूं।

श्री च०का० भट्टाचार्य (पश्चिम दीनाजपुर): रात्रिर्नीगमिष्यति।

श्री वाजपेयी : अभी माध्यमिक स्तर पर तीन भाषाओं का फारमुला चल रहा है– एक मातृभाषा, दूसरे अंग्रेजी और तीसरी हिन्दी । अब अगर संस्कृत को अनिवार्य भाषा बनाया जाएगा तो वह चौथी भाषा होगी । यह तर्क दिया जाता है कि बालकों का कोमल मस्तिष्क चार भाषाओं का बोझ सहन नहीं कर सकेगा । हमारे प्रधान मंत्री जी, इस तर्क से सहमत नहीं हैं । उन्होंने कई बार इस बात को दोहराया है कि बच्चों का मस्तिष्क भाषायें ग्रहण करने की अधिक क्षमता रखता है । उन्होंने फिनलैंड का उदाहरण दिया था और कहा था कि वहां फिनिश और स्वीडिश भाषाओं के अतिरिक्त प्रत्येक छात्र को दो और भाषायें पढ़नी पड़नी हैं । तो यह जो बोझ की बात की जाती है यह मेरी समझ में नहीं आती है । मातृभाषा संस्कृत भाषा और हिन्दी, यद्यपि इनकी सख्या अलग अलग है और सख्या की दृष्टि से वे अनेक दिखाई देती हैं मगर वे एक दूसरे के इतने निकट हैं, परस्पर इतनी घनिष्ठता के बंधन मे आबद्ध हैं कि अगर उन्हें अनिवार्य कर दिया जाए तो छात्रो पर बहुत अधिक बोझ पडेगा, यह मै मानने के लिए तैयार नही हू । लेकिन अगर आप इस बोझ को कम करना ही चाहते हैं तो इस फारमुले में से अंग्रेजी को निकाल सकते हैं । अंग्रेजी की क्या आवश्यकता है ? मैं बूढों को संस्कृत पढने के लिए नहीं कह रहा हू । यह कह दिया जाता है कि देश से अंग्रेजी तो जाएगी ही मगर धीरे–धीरे जाएगी । मैं जानना चाहता हूं कि कितनी धीरे जाएगी ? अगर आप माध्यमिक स्तर पर अंग्रेजी अनिवार्य रखते हैं तो माध्यमिक स्तर से निकला हुआ छात्र जो दस वर्ष बाद जीवन संग्राम में प्रवेश करेगा क्या तब अंग्रेजी का ऐसा ही बोलबाला रहेगा जैसा आज है?

श्री ब्रजराज सिंह (फिरोजाबाद) : अधिक रहेगा अगर यही रहें तो ।

श्री वाजपेयी : मैं समझता हूं मगर शिक्षा मंत्री जी वस्तुतः शनैः शनैः अंग्रेजी का स्थान हिन्दी को देना चाहते हैं तो उसका आरम्भ यहां से होना चाहिये कि माध्यमिक स्तर पर अंग्रेजी अनिवार्य न रहे और इसमें भी मैं एक सुझाव देने को तैयार हूं कि जो छात्र विज्ञान की शिक्षा प्राप्त करना चाहता है या अन्य प्राविधिक विषय का अध्ययन करना चाहते है, वह यदि चाहे तो अंग्रेजी को अनिवार्य रूप से पढ़े मगर जो वाङ्मय साहित्य है, जो अर्थ शास्त्र है, राजनीति शास्त्र है, इनके अध्ययन के लिए अंग्रेजी क्यों अनिवार्य रहनी चाहिये ।

अब यहा यह भी तर्क दिया गया है कि अंग्रेजी मातृभाषा है । किसकी मातृ-भाषा है? यह कहा जाता है कि जो हमारे देश मे एंग्लो इंडियन लोग रहते हैं, अंग्रेजी उनकी मातृभाषा है । सभापति महोदय, मुझे इस सम्बन्ध में यह निवेदन करना है कि भारतीय संविधान मे एंग्लो इंडियन की जो व्याख्या की गई है उसके अनुसार एंग्लो इंडियन वह है जिस का पिता तो अंग्रेज है मगर माता भारतीय है । तो ऐसे व्यक्ति की मातृभाषा अंग्रेजी नही हो सकती है और अगर वह कहे कि अंग्रेजी हमारी पितृभाषा है तो वह तर्क मेरी समझ में आ सकता है । अगर पितृ भाषा के रूप में आप अंग्रेजी बनाये रखना चाहते है तो कोई आपत्ति की बात नही है । लेकिन अंग्रेजी मातृ भाषा की श्रेणी में नही आती है । अंग्रेजी को भारतीय भाषा का रूप देने के लिए इस सदन में यह भी तर्क दिया गया कि अंग्रेजी ही विदेशी नही है बल्कि संस्कृत भी विदेशी है । क्यों विदेशी है इसके बारे में कहा गया कि क्योंकि आर्य बाहर से आये, इस वास्ते विदेशी है । ये विचार हम बहुत दिन तक सुन चुके हैं । देश के नैतिक मनोबल को तोड़ने के लिए सांस्कृतिक दिग्विजय की भावना से अभिभूत हो कर परकीयों ने, विदेशियों ने भारतीय मस्तिष्क पर इस बात को लादने

[श्री वाजपेयी]

की चेष्टा की कि वे भारत के मूल निवासी नहीं हैं । लेकिन जो ऐसा कहते हैं उन्होंने वेदों का पाठ नहीं किया है । अगर आर्य बाहर से आये होते तो वेदों में, वेदों की ऋचाओं में जिस देश से वे आये थे, उसकी थोड़ी न थोड़ी झलक जरूर दिखाई देती । लेकिन वेदों में जहां नदियों का वर्णन है, जहां पर्वतों का वर्णन है, वे सब भारत में प्राप्त होते हैं । मनुष्य की, मानव जाति की स्मृति इतनी कमजोर नहीं है कि वह वेदों में उस कल्पित देश का वर्णन जिस से आर्य आये बताये जाते हैं, न करतीं । इसका यह अकाट्य प्रमाण है कि आर्य बाहर से नहीं आये, वे सप्त सैन्धव के निवासी थे जो आजकल का पंजाब और काश्मीर है जहां से आर्य लोग, जिस पर्वत में आर्य लोग सोम ला कर यज्ञ किया करते थे वह मूजवान पर्वत काश्मीर के उत्तर की ओर है । आर्य भारत के मूल निवासी थे, आदि निवासी थे, अनादि निवासी थे और उनकी भाषा भारत की भाषा थी । इस वास्ते मैं कहना चाहता हूं कि अंग्रेजी और संस्कृत की तुलना नहीं हो सकती है ।

सभापति महोदय, भाषा के साथ भावनायें चलती हैं और भावनाओं के पीछे संस्कृति जुड़ी हुई है । आज सरलता का नाम लिया जाता है । मैं दो शब्द आपके सामने रखना चाहता हूं । एक कलचर है। हमारे यहां कल्चरल एफेयर्स के एक मिनिस्टर हैं, पता नहीं वह देश की संस्कृति को उसके विशुद्ध रूप में कितना समझते हैं लेकिन मेरा निवेदन यह है कि अगर विद्यार्थी संस्कृत नहीं जानता है तो वह संस्कृति का अर्थ नहीं समझ सकता है । संस्कृति "कृ" धातु से बनी है जिस का रूप "कर" होता है, फिर कृति होता है, फिर प्रकृति होता है, फिर विकृति और फिर संस्कृति । इस वास्ते अगर संस्कृत का ज्ञान नहीं होता है तो इस भेद को समझा नहीं जा सकता है । कल्चर जो नकली मोती होता है उसको कल्चर्ड मोती कहते हैं । तो कल्चर तो नकल का नाम है । अंग्रेजी में धर्म के लिये भी कोई शब्द नहीं है । आज हमारे देश में छात्रों में अनुशासन लाने के लिये नैतिक जागरण उत्पन्न करने के लिये सदाचार की शिक्षा देने की, धार्मिक शिक्षा देने की चर्चा हो रही है । लेकिन कुछ लोग धर्म के नाम से चौंकते हैं क्योंकि उन्होंने अंग्रेजी पढ़ी है । उनका मत है कि धर्म यानी रिलिजन, रिलिजन यानी पूजा पाठ, कर्मकाण्ड, सम्प्रदाय । लेकिन धर्म माने पूजा पाठ नहीं है । धारणा धर्ममित्याहु । इस सृष्टि की जो धारणा करता है, जो समुत्कर्ष और निःश्रेयस का पथप्रशस्त करता है, वह धर्म है । लेकिन वह धर्म अंग्रेजी के माध्यम से नहीं समझा जा सकता है । अगर हम भारत की संस्कृति को उठाना चाहते हैं तो हमें समझ लेना चाहिये कि संस्कृत कोई विषय नहीं है, यह तो जीवन की पद्धति है ।

कल प्रो० मुखर्जी के भाषण को मैंने सुना और उस में उन्होंने जो संस्कृत के श्लोकों का पाठ किया, उस से मुझे बड़ी खुशी और आनन्द हुआ, लेकिन जब संस्कृत को अनिवार्य विषय बनाने का प्रश्न आया तो वह उससे पीछे हट गये । मैं निवेदन करना चाहता हूं कि संस्कृत के श्लोकों के पाठ से संस्कृत की रक्षा नहीं हो सकती है । आज जो संस्कृत पढ़ता है, उसे बेकारी का मुंह देखना पड़ता है, उसके जीवनोपार्जन का कोई जरिया नहीं है समाज में उसकी प्रतिष्ठा नहीं है । ऐसी हालत में कौन संस्कृत पढ़ेगा ? मेरे पास आंकड़े हैं जिन से प्रकट होता है कि संस्कृत पढ़ने वालों की संख्या कम होती जा रही है । यह कम क्यों हो रही है ? कम इसलिये हो रही है क्योंकि पढ़ लिख कर, वह कहां नौकरी पा सकेगा कहां कोई पद ग्रहण कर सकेगा और पा सकेगा या नहीं, इसका उसे विश्वास नहीं है । क्योंकि नौकरी मिलेगी नहीं, इस वास्ते संस्कृत कोई लेता नहीं है । जहां तक संस्कृत के शिक्षकों का सम्बन्ध है, उनके तथा दूसरों के वेतनक्रम में जमीन आसमान का अन्तर है ।

17.28 hrs.

[MR. SPEAKER *in the Chair*]

जो संस्कृत पढ़ता है वह पंडित समझा जाता है और पंडित आजकल पर्यायवाची शब्द हो गया

है कि वह कुछ बुद्धू है । यह धारणा बदलनी होगी । लेकिन यह तब तक नही बदली जा सकती जब तक सरकार नौकरी के लिये सस्कृत का ज्ञान अनिवार्य नही करेगी । आज कलकारखानो मे सस्कृत के विद्वान नही रखे जायेंगे, खानो मे नही रखे जायेंगे । आज पब्लिक सैक्टर बढ़ रहा है, मगर उस मे सस्कृत शिक्षा आवश्यक नही है । सस्कृत शिक्षा जहा आवश्यक हो सकती है, वे है एडमिनिस्ट्रेटिव सर्विस, फारेन सर्विस, सरकारी नौकरी और इन में संस्कृत का ज्ञान अनिवार्य कर दिया जाना चाहिये ।

अगर शिक्षा मत्री महोदय इस स्थिति में नही है कि सस्कृत को माध्यमिक शिक्षा के स्तर पर अनिवार्य विषय बना दिया जाये तो मै निवेदन करना चाहता हू कि इस समय जो भारतीय भाषाओ की शिक्षा दी जा रही है, उस में कम से कम यह प्रयत्न किया जाये कि उन मातृ भाषाओ के साथ साथ सस्कृत का एक पर्चा अनिवार्य कर दिया जाये, मराठी, बगला, गुजराती इत्यादि पढने वाले विद्यार्थी सस्कृत भी अनिवार्य रूप से पढ़ें । वह उन्ही की भाषा के अन्तर्गत आ जाये तो उनकी जो भाषा है वह भी पुष्ट होगी और वे भी सस्कृत का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे । इससे देश की एकता की शक्तिया भी अभिवृद्ध होगी और देश में जो अभारतीयता का, परानुकरण का, आत्म-विस्मृति का वातावरण चल रहा है वह भी नष्ट हो जायेगा ।

सस्कृत आयोग के श्लोक में जिस हाथी का उल्लेख किया गया है जिस ने स्वतत्रता के प्रभात के उदित होने से पूर्व ही जनमानस के कमल को उखाड कर फेंक दिया, वह हाथी कोई नही है, विदेशीयता का, अग्रेजियत का, अभारतीयता का, आत्मविस्मृति का हाथी है । समय आ गया है कि अब हम उसके चगुल से अपने को निकाल लें और देश की सस्कृति के आधार पर देश का निर्माण करे और यह सस्कृति सस्कृत भाषा के साथ जुड़ी हुई है, अलग नही की जा सकती है । मुझे आश्चर्य होता है कि सस्कृत को अनिवार्य बनाने का विरोध कोई किस प्रकार कर सकता है । मैं व्यावहारिक कठिनाइया समझ सकता हू । यह राज्य का विषय है, यह भी मैं मानता हू । लेकिन कोई न कोई ऐसा मार्ग निकालना चाहिये जिस से सस्कृत की शिक्षा अनिवार्य कर दी जाये । मैं सस्कृत आयोग के इस सुझाव से सहमत नही हू कि अग्रेजी को बनाये रखा जाये । अग्रेजी को कोई बनाये नही रख सकता । अग्रेजी का युग बीत गया, अग्रेजी की आयु समाप्त हो गई । अग्रेजी शिक्षा का स्तर गिर रहा है । देश का वातावरण बदल गया, जमीन बदल गई, आस्मान बदल गया, मगर अग्रेजो के मानसपुत्र अभी प्रयत्न कर रहे है । अग्रेज चले गये मगर मानसपुत्र छोड गये है । लेकिन उन्हें सफलता नही मिलेगी । मैं चाहता हू कि आप देश के वातावरण को समझें । अगर हमें राष्ट्र निर्माण के लिये देश के जन जन के अन्त करण में राष्ट्रीय चेतना उत्पन्न करनी है जो कि कधे से कधा लगा कर पुनर्निर्माण के यज्ञ में अपना हाथ बटा सकें तो इस के लिये राष्ट्रीय नवोन्मेष करना होगा, राष्ट्रीय सस्कार जागृत करने होये । उस में विकृतिया आ गई है उन्हें हम निकालेंगे ।

अभी सदन में दो प्रकार के विचार प्रकट किये गये । मेरे मित्र श्री भट्टाचार्य जी ने कहा कि सस्कृत को राजकीय भाषा बना दिया जाय और हमारे प्रोफेसर हीरेन मुकर्जी सस्कृत को अनिवार्य भाषा बनाने के लिये भी तैयार नही, और दोनो ही बगभाषी है । दोनो दो सिरो पर खडे है और मै बीच का रास्ता निकालना चाहता हू । सस्कृत को हम माध्यमिक स्तर पर अनिवार्य बनायें । इस अनिवार्यता का रूप क्या हो, यह शिक्षा मत्री राज्यो के परामर्श के साथ तय करे । हमारे सदन की भावना यह है जो कल और आज के वाद-विवाद से प्रकट हो गई, और मैं समझता हू कि हमें इस भावना का समादर करना चाहिये । सस्कृत की जो उपेक्षा

[श्री बाज पेयी]

हो रही है वह हमारे देश की प्रतिष्ठा के अनुकूल नही है । वह राष्ट्र के निर्माण में भी बाधक है और समय आ गया है कि हम संस्कृत के सम्बन्ध में अपने दृष्टिकोण में आमूल परिवर्तन करें ।

नई दिल्ली में एक विशाल ग्रंथागार बनाया जाय जिस में संस्कृत के सभी प्राचीन ग्रंथों को, जो आज कल उपलब्ध नहीं हैं, एकत्र किया जाय । जो विदेशी यहां आते हैं उन्हें हम बाघ तो दिखाते हैं, मगर बाघ तो उन के यहां भी बहुत बड़े हैं । हमारे देश का वैशिष्ट्य क्या है ? विशेषता क्या है ? उसमें इस का प्रदर्शन कर के उन को दिखायें । आल इंडिया रेडियो वेदों के कठपाठ के रेकार्ड तैयार करे । धीरे धीरे कठ पाठी समाप्त हो रहे हैं, राज्य द्वारा उन का सम्मान नही होता । जमीदारी मिट गई, हमें इस का कोई दु ख नही मगर अब संस्कृत भाषा बिना राज्याश्रय के नहीं पनपेगी । हम संस्कृत के दरवाजे खोल रहे हैं । मुझे मालूम है कि हमारे परिगणित बन्धुओ को शिकायत है कि प्राचीन काल में उन्हें संस्कृत पढ़ने से रोका गया । वह गलती हुई और सारा हिन्दू समाज उस के लिये प्रायश्चित कर रहा है । लज्जा से हमारा सिर झुक जाता है कि इस देश में उन को संस्कृत नही पढने दिया गया । इस लिये आज संस्कृत की ओर यह धारणा ठीक नही है । संस्कृत सब की भाषा है, सब को पढना चाहिये । रामायण का प्रसग है कि जब लक्ष्मण जी और रामचन्द्र जी बनवास में थे तो हनुमानजी उन से मिलने आये । जब वह मिल कर चले गये तो भगवान राम ने लक्ष्मण से कहा . तुम ने देखा, हनुमान कैसी व्याकरणशुद्ध संस्कृत बोलते है ? यह वाल्मीकि रामायण का प्रसग है । इस का अर्थ यह है कि संस्कृत कोई हनुमान जी की भाषा नही थी, मगर उन्होने सीखी थी । संस्कृत के प्राचीन नाटको के जो दास होते है, भृत्य होते है, वे संस्कृत समझते जरूर है । बोलते अपनी भाषा में है, लेकिन उन से संस्कृत में कही हुई बात वे समझते है । तो संस्कृत तो सारे देश में छाई हुई थी । संस्कृत हमारे रक्त में सनी हुई है, संस्कृत हमें माता के दूध के साथ प्राप्त हुई है । संस्कृत का अर्थ भारत है और भारत संस्कृत है ।

(Interruption by Pandit K. C. Sharma)

शर्मा जी कुछ बिगड़ रहे हैं । मगर मैं समझता हूं कि यह अंग्रेजी का असर है । यह धीरे-धीरे दूर होगा । अब समय आ रहा है और मैं समझता हूं कि संस्कृत आयोग ने इस सम्बन्ध में जो सिफारिशें की है, उन पर गम्भीरता से सरकार विचार करेगी । स्वतंत्रता के १२वें वर्ष के बाद अब संस्कृत के भाग्य जागे हैं और मैं समझता हू कि अब भी देर नही है और अगर हम ठीक रास्ता अपनायेंगे तो संस्कृत भाषा के साथ साथ हमारे राष्ट्रीय जागरण के प्रयत्न भी सफल होंगे ।

श्री राधे श्याम व्यास (उज्जैन) अध्यक्ष महोदय, शासन ने संस्कृत आयोग की नियुक्ति कर के एक बहुत ही शुभ काम किया और संस्कृत के योग्य और विद्वान्

Mr. Speaker: There is not much time. By the consent of the House, 10 minutes were allowed for each Member That was the announcement Within these ten minutes, I would request hon Members to indicate whether they support or oppose any particular recommendation. Every recommendation need not be taken up Some of the recommendations may be referred to as to whether *Sanskrit ought to be made compulsory* or otherwise in the secondary stage

Shri Braj Raj Singh: Some slokas have got to be recited!

Mr. Speaker: It is not necessary though I would myself like to hear some slokas There seems to be excess of it, and they may be reserved for another occasion

Shri Narayanankutty Menon: They are all interested.

Mr. Speaker: Yes; I am only anxious to see that hon. Members should try to impress on the House as to whether they agree or do not agree,

for one reason or other, with the recommendations.

श्री राधे लाल व्यास : यह सदन और हमारे सभी देशवासी संस्कृत आयोग और उस के विद्वान् सदस्यों के बहुत ही आभारी है कि उन्होंने इस विषय का काफी गहन अध्ययन कर के एक बड़ी अच्छी रिपोर्ट हमारे सामने प्रस्तुत की है। संस्कृत आयोग ने अपनी रिपोर्ट में जो सब से पहले एक महत्वपूर्ण सिफारिश की थी वह यह थी कि संस्कृत कमिशन की रिपोर्ट का प्रकाशन जिस समय हो उस के साथ साथ उस रिपोर्ट का संस्कृत में अनुवाद करा कर वह भी प्रकाशित किया जाये। मैं माननीय मंत्री महोदय से जानना चाहूंगा कि इस का संस्कृत अनुवाद किया गया या नहीं, और यदि नही किया गया तो यह दुर्लक्ष्य क्यों किया गया। जब कि इस पर जोर दे कर एक सिफारिश की गई थी तो उस की उपेक्षा क्यों की गयी।

दूसरा निवेदन मैं यह करना चाहता हूं....

Mr. Speaker: As I understand, the main thing is, whether at any particular stage, Sanskrit should be made compulsory or not, and if it is to be made compulsory, in what places and stages. Objection has been raised to having four languages; that a student has to read four languages. Shri H. N. Mukerjee spoke in favour of Sanskrit all along and ultimately said that so far as the question of making it compulsory is concerned it is rather difficult. It may be so in West Bengal and other places where they will have to learn four langauges and where Hindi is not the mother-tongue. Possibly, where Hindi is the mother-tongue Sanskrit may be made compulsory. These are the things on which hon. Members could make some suggestions. There need not be one rule for the whole of India, though in some shape or other Sanskrit may be introduced. It may be part of the course. Some marks may be allotted to it. Gradually, it may go on. Some tangible thing may be suggested. It is not as if the hon. Minister has made up his mind. He is also trying to find out how best to implement this. I think that is what the hon. Minister thinks.

Dr. K. L. Shrimali: Yes.

Mr. Speaker: I am sure there is no one individual in this country who does not feel that much of our ancien literature is found in Sanskrit; that most of the languages have derived most of their words from Sanskrit; and that our cultural and tradition etc., are enshrined in Sanskrit. Each country is proud of its own language and its heredity. All these are common. The point is, how best can we give effect to the recommendations, consistent with the latest developments in the world. That is the only point. Whether to load the children with too many languages or not is also a question. How to solve this problem? Hon. Members will think on these lines.

Shri Sinhasan Singh (Gorakhpur): The Speaker has taken part in the debate!

Shri Braj Raj Singh: In continuation a sloka may be uttered by you.

Mr. Speaker: Shri Radhelal Vyas.

श्री राधेलाल व्यास : रिपोर्ट तो हमारे सामने आ गई, लेकिन जिस बात की अब सब से ज्यादा आवश्यकता है वह यह है कि इस रिपोर्ट में जो सिफारिशें की गई है उन को जल्दी से कोई अमली रूप दिया जाय। ऐसा न हो कि उन सिफारिशों के बारे में फिर एक कमेटी बने और वह जो सिफारिशें दे उन पर फिर एक कमेटी बने। इन कमेटियो के जाल में जिन सिफारिशों को कार्यान्वित किया जाना है उन में विलम्ब नही किया जाना चाहिये।

[श्री राधेलाल व्यास]

संस्कृत के पठन पाठन के सम्बन्ध में अधिक कहने की आवश्यकता नहीं है। आयोग ने अपने प्रतिवेदन में काफी बातें कही है। इस के पूर्व भी जो डा० राधाकृष्णन की यूनिवर्सिटी एजुकेशन रिपोर्ट थी उस में और सेकेन्डरी एजुकेशन रिपोर्ट, जिस के अध्यक्ष डा० मुदालियर थे, उस में, और उस के बाद आफिशल लैंग्वेज कमिशन की रिपोर्ट, जिस के अध्यक्ष श्री खेर साहब थे, इन सब में काफी जोर दे कर कहा गया है कि संस्कृत का पढा जाना तो स्वयंम् देश के हित में होगा और उस से देश को बहुत लाभ पहुंचेगा। तो इन सारे विद्वानो के मत के आने के बाद कोई मतभेद नहीं रहता है, कोई आपत्ति नहीं कर सकता है कि संस्कृत न पढ़ाई जाय। लेकिन सवाल यह है इस को जल्दी से जल्दी किस तरीके से लागू किया जाय। इस पर हमें गम्भीरता से विचार करना चाहिये।

मेरे मित्र श्री वाजपेयी ने जो श्लोक पढा वह बिल्कुल स्पष्ट है। जहा जहा भी कमिशन गया, उस ने पाया कि लोगो की आकांक्षा है कि अब भारत स्वाधीन हो गया है तो इस संस्कृत के उत्थान के लिये, सस्कृत भाषा की भावना से कुछ न कुछ ठोस कदम उठाया जाय। आयोग ने अपनी रिपोर्ट मे दु ख के साथ कहा है कि स्वतंत्रता के बाद दूसरी भाषाओ की तरफ जहा काफी ध्यान गया है वहा उस के बाद संस्कृत बहुत पीछे रही है और उस को शासन की ओर से जो प्रोत्साहन मिलना चाहिये वह नही मिला और यह शिकायत जल्दी से जल्दी दूर की जानी चाहिये। अब कुछ सफारिशें जो कमिशन ने की हैं उसमे प्रमुख यह है कि पुराना जो हमारा तरीका संस्कृत पढ़ने का है, पाठशाला पद्धिति का है उसको जल्दी से जल्दी ठीक ढंग से और व्यव स्थत रूप से चलाया जाना चाहिये और इन पाठशालाओं और संस्कृत विद्यालयों में संस्कृत के साथ ही जो आधुनिक साइंस है गणित है अथवा दूसरे विषय हैं वे भी पढ़ाये जाने चाहियें। आज हम देखते है कि सस्कृत के विद्वान तर्क शास्त्र के विद्वान, व्याकरणाचार्य, साहित्याचार्य, ज्योतिषाचार्य और आयुर्वेदाचार्य ५०, ६० या ७०, ७० रुपये पर नियुक्त किया जाता है, उनकी कोई कद्र नही करता और संस्कृत विद्यालयों से जो पढ़ कर निकलते हैं उनको कहीं नौकरीयो में स्थान नही मिलता है। इसलिये यह जरूरी है कि जो कोर्स पठशालाओं आदि में पढ़ाया जाय वह पूरे समय का हो और उस में सभी साहित्य और विषय पढ़ाये जायें और वहां से पास होकर निकलने वाले विद्यार्थियों की योग्यता बी० ए० और एम० ए० के समकक्ष मानी जाय और जो सिविल सर्विस की परीक्षाए होती है उन में उनको पूरा स्थान दिया जाय और यदि ऐसी व्यवस्था की जायगी तो मैं समझता हूं कि संस्कृत की तरफ अधिक से अधिक लोग आकर्षित होगे और उस को अपनायेगे।

संस्कृत पाठशालाओं का जहां तक सवाल है कुछ मित्रो ने कहा है कि यहा भी एक अच्छी लाइब्रेरी हो, पाठशालाए सभी जगह हो। दिल्ली में एक बडी लाइब्रेरी हो, एक सेंट्रल इस्टीच्यूट आफ इनडौलोजी हो और संस्कृत युनिवरसिटीज हो। अब सवाल यह है कि यह कहा हो और इनके लिये उपयुक्त स्थान कहा है इनको देखने की जरूरत है। मैं निवेदन करूंगा कि सस्कृत के लिए उपयुक्त स्थान दिल्ली नही हो सकती है। सेंट्रल इस्टीच्यूट आफ इनडौलोजी के लिये आपको उपयुक्त स्थान देखना होगा। सस्कृत का विकास सबसे अधिक कहा हुआ और उसके लिये कौन सा उपयुक्त स्थान है ?

एक माननीय सदस्य : उज्जैन है।

श्री राधेलाल व्यास : जी हां जहा और स्थान है वहा उज्जैन भी है। संस्कृत पाठशालाए हरिद्वार, ऋषिकेष, काशी, तिरुपति, काजीवरम्, अयोध्या और इलाहाबाद में हो सकती है और उज्जैन मे भी हो सकती हैं। त्रिवेन्द्रम में भी संस्कृत पाठशालाएं हो सकती है।

अध्यक्ष महोदय, उज्जैन का इतिहास इतना उज्जवल है कि उसके बार में मैं अपको

क्या निवेदन करू। रामायण और महाभारत काल में भी उज्जैयिनी का वर्णन आया है। यह वह स्थान है जहा पर महाभारत काल में सान्दीपनी मुनि के पास कृष्ण और बलराम ने विद्याध्यन किया और उनके शिष्य कृष्ण ने आगे चल कर ससार को गीता का ज्ञान दिया और जो कि दुनिया के लोगो को प्रेरणा दे रही है। उनके बाद भी कई विद्वान यहा पर जन्में हैं। गुणोढ्य यही पर हुए जिन्होने कि भातृ कथा लिखी और जो कि रामायण और महाभारत के बाद सब से अधिक ससार प्रसिद्ध ग्रथ है। गुणाढ्य अवन्ति के राजा थे। उसके बाद भ्रतृहरि, कालिदास, अमरसिंह, वराहमिहर, आदिवन, रत्न, हर्ष आदि विद्वानो का नाम कौन देशवासी ऐसा होगा जो कि न जानता हो बल्कि यह तो ससार प्रसिद्ध विद्वान हुए हैं। यह सारे विद्वान भी वही हुए थे और वही पर उनकी कृतिया भी फली फूली थी

Dr K. L. Shrimali: I think it would be better if the hon Member explains why the University of Ujjain is not making satisfactory progress

श्री राधे लाल व्यास उज्जैन यूनिवरसिटी इसलिए तरक्की नही कर रही है क्योकि शासन की उसकी तरफ उपेक्षा है। उज्जैन कोई मध्यभारत या मध्यप्रदेश का ही नही है वरन् उस पर तो सारे भारत को गर्व होना चाहिये। यह वह स्थान है जिसने कि भारतीय इतिहास को स्वर्ण युग दिया है और जो कि भारतीय सस्कृति का एक महान् केन्द्र रहा है और उचित तो यह था कि उसकी ओर केन्द्रीय सरकार का भी ध्यान जाता और वह भी उसकी व्यवस्था करती और उसको राज्य सरकार के भरोसे ही न छोड़ दिया जाता जैसा कि किया जा रहा है। उज्जैन में इस वर्ष हमने कालिदास जयन्ती मनाई और अध्यक्ष महोदय आप स्वत वहा पर पधारे थे और कालिदास जयन्ती समारोह के अवसर पर तमाम देश भर के विद्वान् वहां पर एकत्र हुए थे और इस समारोह को मनाने में सारे राज्य के मत्रियो और राज्य सरकारो ने भी योग दिया था। मै जानना चाहता हू कि क्या केन्द्रीय सरकार ने कभी उस उज्जयिनी की ओर ध्यान दिया और क्या उसको कभी किसी तरीके से वहा पर कालीदास की अमर कृति को हमेशा कायम रखने के लिए कोई स्मारक के रूप में पैसा देने की भी क्या कोई योजना बनाई? आज मै यह निवेदन करना चाहता हू कि विक्रम युनिवरसिटी को अगर आपको चलाना है तो उसको एक केन्द्रीय युनिवरसिटी बना लिया जाय। उस विक्रमयुनिनिवरसिटी की कल्पना एक सस्कृत युनिवरसिटी के रूप में आयोग ने की है। आयोग ने कहा है कि वह एक अच्छी युनिवरसिटी है और यह युनिवरसिटी केन्द्र को चलानी चाहिये। सस्कृत युनिवरसिटी को राज्य शासन नही चला सकेगे। मै निवेदन करूगा कि यह युनिवरसिटी अभी नई है और सस्कृत के साथ साथ सब विषयो के अध्ययन की वहा पर व्यवस्था रखिये। ५० लाख रुपया गगाजली फड से ग्वालियर नरेश ने दिया है है वह भी उसके साथ मिल जायगा और केन्द्रीय सरकार के पास बहुत से और फड है और उनको लगा कर इसको एक बृहत् युनिवरसिटी बना दें और उसको अपने हाथ मे ले ले। आप उस युनिवरसिटी को अपने हाथ में लेकर और उसके लिए धन की व्यवस्था करके उसे एक आदर्श युनिवरसिटी बनायें, यह मेरी अपील है और मै आशा करता हू कि राज्य सरकार बडी प्रसन्नता के साथ उसको उन्हें देने को तैयार हो जायगी।

अभी कालिदास स्मारक वहा बन रहा है। विक्रमी कृत्ति मदिर बन रहा है। अब हमारे देश में कितने ही मठ है और कितने ही धार्मिक सस्थान है जिनका कि आयोग ने अपनी रिपोर्ट मे जिक्र किया है और जिनकी कि करोडो रुपये की निधि है और मै चाहता हू कि इन सब का उपयोग सस्कृत प्रसार में

[राजे लाल व्यास]

किया जाय। शासन को अच्छे स्थानों पर संस्कृत पाठशालाओं की स्थापना करनी चाहिये और देश में संस्कृत प्रसार की शासन को एक निश्चित योजना बनानी चाहिये और यदि उसमें उज्जैन का भी एक तरीके से स्थान रहे तो मैं समझता हूं कि यह उचित ही होगा। अब उज्जैन यूनिवरसिटी जो अभी तक तरक्की नहीं कर रही है और ठीक से नहीं चल रही है तो उसके लिए कई कारण हो सकते हैं और जिसके लिए कि हम सब जिम्मेदार हैं। एक बड़ा कारण यह है कि राज्य की उपेक्षा उसके प्रति रही है और उसका जितना सम्मान होना चाहिये और जिस आदर की दृष्टि से उसको देखा जाना चाहिये था, नहीं देखा गया। हमें इस पर गम्भीरतापूर्वक सोचना चाहिये कि आज वहां पर संस्कृत का जैसा अध्ययन और प्रचार होना चाहिये सो वैसा क्यों नहीं हो रहा है? हम यह क्यों भूल जाते है कि अतीत काल में यही उज्जैन नगरी संस्कृत का प्रमुख केन्द्र रही है और वहां पर संस्कृत के एक से एक प्रकांड पंडित हो चुके हैं। हम देखते हैं कि महाकवि कालिदास और भतृहरि वही हुए। हर्ष भी वही हुए जो कि संस्कृत के बड़े विद्वान थे। इसके अतिरिक्त वाणभट्ट, दंडी, महाभास्कर, महाकवि धनपाल, गुणशर्मा, महाकवि भारवी, आचार्य दडी, आचार्य भद्रबाहु, परमार्थ और कुमार महेन्द्र, संघमित्रा हुए हैं जिन्होने कि सीलोन में जाकर के बौद्ध धर्म का प्रचार किया था। सिद्धसेन दिवाकर, मुंज, धनपाल, धनंजय, भोज और महाकात्यन सरीखे विद्वान वहां पर हुए और मैं समझता हूं कि एसी पावन स्थली पर लोगों को जाकर संस्कृत का अध्ययन करने में विशेष प्रेरणा मिलेगी। उज्जैन के अतिरिक्त और भी कई एक स्थान हैं और महत्वपूर्ण स्थान है जिनकी कि ओर यदि शासन ध्यान दे और उनका संस्कृत अध्ययन करने और प्रसार करने में उपयोग करे तो उससे देश को लाभ होगा।

एक मिनट मैं और लूगा और वह यह कि संस्कृत साहित्य के विद्वानों का कम्युनिटी डेवलेपमेंट प्राजेक्ट्स ऐरिया में संस्कृत प्रचार के लिए अधिक से अधिक उपयोग किया जाना चाहिये। इस कमिशन की रिपोर्ट में भी यह सुझाव दिया गया है कि हमारे जो फंड्स हैं उनका उपयोग रामायण, महाभारत और गीता का उपदेश अगर इन विद्वानों द्वारा दिलाने की उचित व्यवस्था की जाय तो हमारे देश में एक नई जाग्रति पैदा हो सकती है, एक नई चेतना और एक नई प्रेरणा फैलेगी और आज जो अनुशासनहीनता और अकर्मण्यता देश में दिखाई दे रही है इन सब को दूर करने के लिए यदि कोई परम औषधि है तो हमारी संस्कृत भाषा ही है। हमें संस्कृत भाषा का अधिकाधिक प्रयोग करना चाहिये। संस्कृत भाषा में हमारी अटूट निधि है और उसके अध्ययन मात्र से मनुष्य प्रेरणा लेता है और उसके दिल में एक हलचल सी पैदा हो जाती है और उसके दिल में अच्छे और पावन भाव उठने लगते है। नई भावनाएं उसको मिलती है, नई चेतनाए मिलती है। मुझे आशा है कि यह तमाम सुझाव जो कि इस सस्कृत कमिशन की रिपोर्ट में दिये है उनका उपयोग शासन करेगा और इस ओर भी ध्यान देगा। इन शब्दों के साथ मैं आपको धन्यवाद देते हुए अपना स्थान ग्रहण करता हूं।

श्रीमती लक्ष्मी बाई (विकाराबाद): अध्यक्ष महोदय,

"निराश्रया न शोभन्ते पंडिता: वनिता: लता:

संस्कृत एक शक्तिशाली भाषा है और अध्यक्ष महोदय, चूकि संस्कृत आपको अत्यन्त प्रिय है इसलिए मैंने आरम्भ संस्कृत श्लोक से किया। अब समझने की चीज यह है कि संस्कृत और संस्कृति अलग-अलग नहीं है। संस्कृत एक शक्तिशाली भाषा है और वह तमाम प्रादेशिक भाषाओं की जननी है। भाषा के साथ भाव चलते है और भाव के साथ संस्कृति जुड़ी रहती है। अगर हमारे देश का विद्यार्थी संस्कृत नहीं जानता तो वह भारतीय

संस्कृत भी नहीं जानता। बिना संस्कृत के ज्ञान के भारतीय संस्कृत का ज्ञान भी नकली और अधूरा है।

संस्कृत को अपनाने व उसे शिक्षा में अनिवार्य विषय बना देने से प्रादेशिक व प्रान्तीय भाषाओं को किसी प्रकार की भी हानि नहीं पहुंचने वाली है क्योंकि आखिर में उनका आदि स्रोत तो संस्कृत ही है।

संस्कृत तो वर्षों से हमारे घरों के अन्दर पैठी हुई है और भले ही हमारी बहनें चाहे उनका अर्थ बिल्कुल ठीक तरह से न समझती हों लेकिन वे संस्कृत श्लोक पढ़ती हैं और अपने बच्चों को भी याद कराती हैं, गीता आदि धर्म पुस्तकों के श्लोकों को अपने बच्चों को सुनाती हैं। हमारी औरतें तो अक्सर संस्कृत के भजन गा गा कर घरवालों को सुनाती हैं किन्तु हमारे बड़े बड़े माइयों को यह सस्कृत के भजन आदि नहीं आते हैं और मैं कुछ विकृत स्वरूप आपको बताना चाहती हूं।

कल से यहां पर संस्कृत के बारे में चर्चा हो रही है। हमारे बहुत से आनरेबिल सदस्यो ने सस्कृत के श्लोक पढ़े। कुछ सदस्यों ने यह भी कहा कि बच्चो को अगर सस्कृत पढाई जायेगी तो यह उनके लिए बड़ा बोझा हो जायेगा। लेकिन मैं उनसे कहना चाहती हूँ कि सस्कृत हमारी प्रान्तीय भाषाओं से अलग नही है। वह बच्चो के लिए बोझा नही हो सकती। कुछ माननीय सदस्यों ने कहा है कि सस्कृत का प्रचार करने से हमारी प्रान्तीय भाषायें खराब हो जायेंगी। मै समझती हूँ कि यह धारणा सही नही है। सस्कृत से प्रान्तीय भाषायें अलग नही है। प्रान्तीय भाषाओ में तो संस्कृत मिली हुई है। मैं उदाहरण के लिए आपके सामने कुछ वाक्य रखती हू जिनसे आप समझ सकेंगे कि किस प्रकार संस्कृत हमारी प्रान्तीय भाषाओ में मिली हुई है। हमारे यहा कहा जाता है :

"बालको प्रात काल उठो, उपाध्याय या गुरु के पास जाकर पाठ पढ़ो" आप देखें कि इस वाक्य में संस्कृत के कितने शब्द हैं। परन्तु आज कल जो भाषा बोली जाती है वह इस प्रकार की है :

"बाय गैट अप, टीचर के पास जाओ और जाकर लैसन लो"

इस प्रकार की भाषा के मिलने से हमारी प्रान्तीय भाषायें खराब हो रही हैं। तो मेरी समझ में नही आता कि किस प्रकार संस्कृत से हमारी प्रान्तीय भाषायें खराब हो सकती हैं।

सुबह मैं यहां आ रही थी तो एक मेम्बर साहब बोल रहे थे :

"यस्टरडे लैटर आया है मुझे ऐट दन्स जाना है"

इस तरह की भाषा से किस प्रकार प्रान्तीय भाषा की उन्नति हो सकती है यह मेरी समझ में नही आता। अक्सर कहा जाता है कि "लेडीज डिसकशन में पार्ट लेती हैं"। इसमें आप देखें कि कितनी अग्रजी है और कितनी सस्कृत है और कितनी प्रान्तीय भाषा है।

तो मैं कहती हूं कि आजकल हमारी प्रान्तीय भाषायें इस तरह से खत्म हो रही हैं। स्पीकर साहब जानते हैं कि जब अग्रेज यहा थे तब कितनी सस्कृत पढ़ायी जाती थी। पर आज पाठशालायें खत्म हो रही हैं क्योकि कोई सहारा नही है। मैं कोई पुराण की बात नही कहना चाहती पर इस विषय में कुछ सुझाव देना चाहती हू। संस्कृत नारियल के टुकड़े की तरह है जिसको केवल मुह में डाल लेने से मजा नही मालूम पड़ता, उसको चबाने से ही उसका मजा मालूम होता है। सस्कृत पढ़ने वाले पाच बजे उठकर गुरु के पास जाकर श्लोक पढ़ते है तब उनको सस्कृत आती है। उससे उनका चरित्र बन जाता है। यह नही है कि इधर उधर से नोट लिख लिये और शरबत बना कर पी लिया। संस्कृत ऐसी भाषा नही है। आजकल वह

[श्रीमती लक्ष्मीबाई]

हमारी भाषा खत्म हो रही है। अभी भी ऐसे पडित मौजूद हैं जिनको रामायण, महाभारत आदि ग्रन्थ कठस्थ है। उनको किताब की आवश्यकता नही है। अगर वह पाठ करना शुरू करे तो चार चार घटे तक बिना किताब की सहायता के पाठ करते चले जा सकते हैं। ऐसे हमारे सस्कृत के विद्वान है जो कि ब्रह्म मुहूर्त में उठकर, चार बजे उठकर गगा स्नान करके अच्छी हवा में बैठकर अध्ययन करते है। आजकल के लोग क्या करते है। रात को ११ या १२ बजे तक सिनेमा देखते है और सवेरे दस बजे तक सोते रहते हैं और बिना मुह धोये ही बैड काफी पी लेते है। बगैर मुह धोये नाश्ता कर लेते है। हमारे मत्री महोदय तीन करोड रुपया खर्च कर रहे है लेकिन रुपया तो खर्च हो जाता है लोगा का कैरेक्टर नही बनता। पिछले दो सौ साल से हमारा कैरेक्टर गिर रहा है, दुश्मनो ने उसको गिराने की बराबर कोशिश की है। हम को स्वतत्र हुए १२ साल हो गये। हमको इस ओर ध्यान देना चाहिए।

आजकल हालत यह है कि जब नौकरियो के लिए सिलेक्शन होता है तो सस्कृत के पडितो को उतना भी वेतन नही दिया जाता जितना कि एक मैट्रिक पास लडके को दिया जाता है। इससे वे पडित बहुत निराश होते है और उनके दिल में दर्द होता है क्योकि उनको कुछ भी प्रोत्साहन नही दिया जाता। आप एक लडके को इजियरिग पढ़ाने के लिए १५० रुपया महीने का स्कालरशिप देते है और साल भर में उसको २,५०० से ज्यादा रुपया देते हैं और इस प्रकार आप उसको तीन साल तक स्कालरशिप देते हैं। लेकिन सस्कृत के पडितो को आप क्या प्रोत्साहन दे रहे हैं। यह सब होते हुए भी अभी सस्कृत के पडित खत्म नहीं हो गये है और अक्सर बहनें रामायण और महाभारत और गीता को अच्छे कपडे में बाध कर रखती है और पढती है। ऐसा औरतें बहुत कर रही है। इस चीज को बढ़ाने के लिए आपको कुछ खर्च करना चाहिए। यहां पर बहुत से सस्कृत के बड़े बड़े पडित बोले है और उन्होने बहुत से सुझाव दिये हैं। मेरे भी कुछ सुझाव है। मेरा सुझाव है कि मिडिल स्कूलो में सस्कृत अनिवार्य कर दी जाये। इससे सस्कृत की बहुत उन्नति होगी। इससे प्रान्तीय भाषाओ को टानिक मिलेगा, हमको इससे डरना नही चाहिये, सस्कृत रखने से प्रान्तीय भाषाओ की बहुत उन्नति होगी।

यहा पर मिनिस्टर साहब को सस्कृत यूनिवरसिटी के लिये बहुत सुझाव दिये गये है। यह बहुत अच्छी चीज है। लेकिन आपको यह भी सोचना चाहिये कि यूनीवरसिटी से जो पडित निकलेगे वह क्या करेगे। अभी आप उनकी उतनी भी कद्र नही करते जितनी कि एक मैट्रिक पास लडके की करते है। ऐसा आगे नहीं होना चाहिये। आपको यह सोच लेना चाहिये कि पहले साल मे यूनिवरसिटी मे कितने बच्चे आयेगे, दूसरे में कितने आवेगे और फिर किस प्रकार उनको बाद मे काम म लगाया जायेगा।

आजकल पबलिक सरविस कमीशन के सिलेक्शन मे जो लडके स्पोर्ट्स में अच्छे होते है उनको प्राथमिकता दी जाती है। लेकिन अगर कोई सस्कृत का पडित है तो उसका कोई ध्यान नही किया जाता। इसी का परिणाम है कि आज लोगो का चरित्र गिरता जा रहा है। अगर आप नीम बोयेगे तो आम कैसे उगेगा। नीम बोने से तो नीम ही पैदा होगा। आज कैरेक्टर बनाने के लिये ठीक वातावरण नही है, कोई सहूलियत नही है। जैसा कि वाजपेयी जी ने कहा आप कल्चरल प्रोग्राम बनाने में बहुत सा रुपया खर्च कर रहे है। मेरी समझ मे नही आता कि इन प्रोग्रामो से कैसे हमारे बच्चो का चरित्र बन सकता है।

मेरा सुझाव है कि आप सस्कृत की यूनिवरसिटी बनावें। आपके पास नाइट स्कूलो की भी स्कीम है। मेरा सुझाव है

कि नाइट स्कूलों के बजाय आप इन स्कूलों को १२ बजे दिन से ६ बजे तक रखें तो ज्यादा लाभ होगा। इन में पढ़ाने के लिये अच्छी अच्छी किताबें बनवायें और इन स्कूलों में औरतों में संस्कृत का प्रचार करे। अगर औरतों को संस्कृत का ज्ञान हो जायेगा तो वह इस ज्ञान को बच्चों के कानों में डालेगी। इन स्कूलों में संस्कृत पढ़ाने के लिये संस्कृत के विद्वानों को रखा जाये। जैसा पुराने जमाने में संस्कृत सिखाने का प्रबन्ध था वैसा ही अब भी होना चाहिये। मैं मंत्री जी को धन्यवाद देना चाहती हूं कि वह कल से बहुत श्रद्धा से हमारी बातों को सुन रहे हैं और काम करने की कोशिश कर रहे हैं। अगर यूनिवर्सिटी बनानी है, तो वह एक अच्छे वातावरण में बनाई जानी चाहिये। मैं अभी अभी हरिद्वार, ऋषिकेश गई थी। वहां पर कितना अच्छा वातावरण है, कितनी ताकत है। वहां पर हर एक साधु सन्यासी ने घर बना रखा है और हर एक साधु सन्यासी ने बड़े बड़े मन्दिर बना कर रखे हुये हैं। नया बंगला बनाने के लिये करोड़ों रुपये खर्च किये जाते हैं। एक अच्छे वातावरण में—जैसा कि कुमारसम्भव में हिमालय के बारे में कहा गया है—संस्कृत की शिक्षा की व्यवस्था की जाय। वहां से पढ़ कर अच्छे अच्छे लोग निकलेंगे, तो हमारे देश के लिये अच्छा होगा।

18 hrs.

औरतों के लिये इस की शिक्षा का प्रबन्ध किया जाय। संस्कृत के पंडितों को मान दे कर उन की ताकत बढ़ानी चाहिये। अगर पब्लिक सर्विस कमीशन में संस्कृत जानने वाले होंगे, तो उसकी अभिवृद्धि होगी। एक मेरा सुझाव यह है कि बहुत सी सरल किताबें होनी चाहिये। हमारे आन्ध्र प्रदेश में बहुत सी किताबें तालपत्रों में लिखी हुई हैं—हजारों किताबें हैं, लेकिन उन को कोई देखने वाला नहीं है। संस्कृत की अच्छी और सरल पुस्तकें छापने में मदद करनी चाहिये। इस विषय में पंडितों को बुला कर उन की राय ली जानी चाहिये।

ये मेरे सुझाव हैं। मैं आपको धन्यवाद देती हूं।

श्री यादव (बाराबंकी) : अध्यक्ष महोदय, कल से संस्कृत आयोग की रपट पर बहस हो रही है। कुछ माननीय सदस्यों ने आयोग की रपट की प्रशंसा करते हुए संस्कृत को अनिवार्य विषय बताने की बात की और कुछ माननीय सदस्य इस हद तक बढ़ गए कि संस्कृत को राष्ट्र-भाषा बनाया जाय। चाहे यूनिवर्सिटी ग्रान्ट्स कमीशन की रिपोर्ट हो, चाहे भाषा कमेटी की रपट हो और चाहे संस्कृत आयोग की रपट हो, इन तीनों को जब हम पढ़ते हैं, तो एक ही प्रश्न उठता है कि हिन्दुस्तान की राष्ट्र भाषा क्या हो। यह प्रश्न इनके साथ जुड़ा हुआ है। कल मैं ने देखा और इस रिपोर्ट को भी पढ़ा, तो यही पाया कि अंग्रेजी और संस्कृत का प्रेम बराबर साथ साथ कायम है। मैं सब से पहले यह कहना चाहता हूं कि डलहौजी और डायर की सन्तानें तो अंग्रेजी की पोषक हैं और मनु जैसे प्रतिक्रियावादी और हिन्दू समाज को दूषित करने वाले और वर्णाश्रम जैसी व्यवस्था कायम कर के आज हिन्दुस्तान में तनज्जुली का रास्ता खोलने वाले की सन्तानों की आज वकालत है संस्कृति की, यह मैं साफ कह देना चाहता हूं। चाहे फ्रैंक एन्थनी हों, चाहे राजगोपालाचारी हों, चाहे सुनीतिकुमार चटर्जी हों, उन सब लोगों की ओर से संस्कृत और अंग्रेजी को किसी न किसी रूप में हिन्दुस्तान के जनसाधारण पर, जिन का इन भाषाओं से कोई वास्ता नहीं है, लादने की पूरी कोशिश की गई है। और असलियत में देखा जाय, तो ये सभी लोग एक सिक्के के दो पहलू हैं, जो कि संस्कृत के पोषक हैं और अंग्रेजी के पोषक हैं। वे चाहते क्या हैं? एक ही तात्पर्य है। क्या? यह कि किसी न किसी तरह से

[श्री यादव]

एकाधिपत्य हिन्दुस्तान की जनता पर कुछ द्विजों का या कुछ मुट्ठी भर लोगों का हमेशा के लिए कायम रहे, चाहे वह संस्कृत के द्वारा हो और चाहे अंग्रेजी भाषा के द्वारा। मैं राजाजी को क्यों दोष दूं और सुनीति कुमार चटर्जी को ही क्यों दोष दूं ?

** ** **

Shri B. Das Gupta (Purulia): On a point of order, Sir, what the hon. Member says has no bearing. Persons like Rajaji and Suniti Kumar Chatterjee should not be vilified in this way. (*Interruptions*).

Mr. Speaker: Order, order. The hon. Member evidently has no arguments to back the points he is making. Why should he indulge in abuse? What I would say is, hon. Members will understand or at any rate, address themselves to the point at issue on merits whether Sanskrit is necessary. We are discussing the report. Let him say, we are not going to accept this. He may say, even it may be reactionary and going back to ancient times. I have no objection.** The hon. Member may not be in favour of it. Let him say, this is going back, this is not a language which ought to be helped or assisted and so on. Let him say so. Let there be no such thing said here. After all, the entire House has to move amicably. Let nobody abuse another.

Shri Yadav: ** ** **

Mr. Speaker: Order, order. The hon. Member may, without using such expressions, say as strongly as he likes that Sanskrit ought not to be revived. I have no objection.

Shri Narayanankutty Menon: He says that it should be revived.

Mr. Speaker: No, he is opposed to it.

Shri Yadav: Yes, *quite so.*

श्रीमन्, आप ने जो निर्णय दिया है, उस के विषय में मुझे कुछ नहीं कहना है।

कल यह तर्क दिया गया कि संस्कृत एक प्रदेश को दूसरे प्रदेश से जोड़ती है। वह किस से किस को जोड़ती है ? वह ऊपर के लोगों—सामन्ती लोगों को जोड़ती है। हम ने तो इस सदन में और सरकार की प्रवृत्ति यही देखी है कि जिस चीज से एकाधिपत्य कायम रहे, उस पर जोर दो। आज यूनिवर्सिटी ग्रान्ट्स कमीशन की रिपोर्ट आती है, जिस में कहा गया है कि अंग्रेजी पर ज्यादा जोर दिया जाये। भाषा कमेटी की रिपोर्ट आती है और उस में अंग्रेजी को १९६५ तक कायम रखने की बात कही जाती है और अगर संस्कृत आयोग की रिपोर्ट और उस की सिफारिशों को देखें, तो मालूम होता है कि हर जगह संस्कृत और अंग्रेजी का प्रेम साथ साथ जुड़ा हुआ है और हिन्दी का नाम लेने की एक तरह से ऐसी कोशिश की गई है कि जैसे कोई हिन्दू औरत अपने पति का नाम नहीं लेती है, उसी तरह से सुनीतिकुमार चटर्जी साहब की जो रपट है, उस में उन्होंने हिन्दी से बराबर दूर भागने की कोशिश की है।

Shri C. K. Bhattacharyya: The report is not merely of Shri Suniti Kumar Chatterji. The report is submitted by some of the masterminds of India. Why does the hon. Member name Shri Suniti Kumar Chatterji repeatedly and why is he attacking Shri Suniti Kumar Chatterji repeatedly?

श्री यादव : माननीय सदस्य पहले ही बोल चुके हैं।

Mr. Speaker: Order, order. All this is unnecessary.

Shri C. K. Bhattacharyya: The report is signed by all the persons from different parts of India. So,

---

**Expunged as ordered by the Chair.

why should Shri Suniti Kumar Chatterji's name be repeatedly mentioned?

Mr. Speaker: I agree.

Shri Yadav: He is the chairman of the commission and he represents the commission.

Shri C. K. Bhattacharyya: No, he does not. The hon. Member can say 'all the members of the commission'.

Shri Yadav: Yes, I say, all the members of the commission, including Shri Suniti Kumar Chatterji.

Mr. Speaker: I would call upon the hon. Member to resume his seat if he continues like this. Let him not refer to any particular member. The report is there, and the hon. Member may attack the report impersonally as much as he likes, and say that this is not a language which ought to be revived, and these are all the arguments, or that no compulsion ought to be there; if anybody wants to study, let him study; or if the hon. Member even goes to the length of saying that nobody should study Sanskrit, I have no objection.

Shri Yadav: Not that.

Mr. Speaker: But let him not refer to any individual member of the commission.

I think he must conclude now.

श्री यादव : श्रीमन्, मैं ही अकेला इस के विरोध में बोल रहा हूं । और सब ने इस के पक्ष में अपना मत व्यक्त किया है । कम से कम हमें अपना तर्क तो रखने दिया जाये, जब कि माननीय सदस्य ने बहुत सा समय ले लिया है ।

अध्यक्ष महोदय: अच्छा, ठीक है ।

श्री यादव: मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि इस के पीछे क्या है । संस्कृत और अंग्रेजी को ले कर उत्तर और दक्षिण का प्रश्न उठाया जाता है । आज इस सम्बन्ध में एक माननीय सदस्य से बात हुई, तो उन्होंने कहा कि अगर संस्कृत को राष्ट्र-भाषा मान लिया जाये, तो उत्तर दक्षिण का प्रश्न हल हो जाये । मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि जो उत्तर दक्षिण का प्रश्न उठ रहा है, वह दक्षिण भारतीयों का नहीं है । इसलिये नहीं है कि मैं जानना चाहता हूं कि बंगाल में और आन्ध्र में—दक्षिण में बहुसंख्यक जातियों का संस्कृत से कितना ताल्लुक है और कितना उन का अंग्रेजी से ताल्लुक है । कोई नहीं जानते, लेकिन उन पर यह लादने की कोशिश क्यों ? इसलिये कि आज राजगोपालाचारी और सुनीतिकुमार चटर्जी और दूसरे लोग. . . . . .

अध्यक्ष महोदय : आप फिर एक बार क्यों उन का नाम ले रहे हैं ?

श्री यादव : उन का नाम कमीशन की रिपोर्ट में है । कैसे न लिया जाये ?

Mr. Speaker: It is not necessary.

श्री यादव : मैं बताऊं कि ये लोग दक्षिण भारतीय नहीं हैं । उन के पूर्वज सभी उत्तर भारत के हैं । ये सब उज्जैन के और यहीं के रहने वाले हैं और दर-असल ये सब बंगाल में जा कर क्या करना चाहते हैं कि वहां की जातियां जैसे घोष, नाशूद्र जातियां जो हैं, जो भारी संख्या में हैं उनके ऊपर एकाधिपत्य अंग्रेजी या संस्कृत के द्वारा कायम रखना चाहते हैं । इसी प्रकार से राजाजी भी जहां पर नाडर, थैवर, मुदालियर इत्यादि जो दक्षिण में बहुत अधिक संख्या में हैं, उन पर संस्कृत या अंग्रेजी भाषा के द्वारा एकाधिपत्य कायम रखना चाहते हैं । सरकार का मन भी एकाधिपत्य में लगता है । जब एकाधिपत्य टूटता है तो सब को डर लगना शुरू हो जाता है, इन मुट्ठी भर लोगों को डर लगना शुरू हो जाता है । आज यही मुट्ठी भर लोग, द्विज स्वार्थी, व्यापार पर, सरकारी नौकरियों पर, रोजगार पर, राजनीति पर छाये हुये हैं और अपना एकाधिपत्य कायम रखना चाहते हैं ।

[श्री यादव]

श्रीमन्, मैं निवेदन करना चाहता हूं कि यह जोश का प्रश्न नहीं है। संस्कृत के नाम पर अभी मेरी बहन ने भी वकालत की। स्त्री को शूद्र समझ कर संस्कृत नहीं पढ़ाई जाती थी और यह दूर का वाकया नहीं है बनारस विश्वविद्यालय का वाकया है जहां पर कि एक कायस्थ महिला को संस्कृत पढ़ने की इजाजत नहीं दी गई और उन्होंने इसकी वकालत की।

Shri Raghunath Singh (Varanasi): No, no. That is wrong.

श्री यादव : श्रीमन्, मैं पूछना चाहता हूं कि जिस भाषा को पढ़ने की शूद्रों को इजाजत न हो, वह क्या कभी लोक भाषा बन सकती है, कभी नहीं बन सकती है। जिस में कर्मकाण्ड करने के लिये शूद्रों को गुंजाइश न हो वह कभी लोक भाषा नहीं हो सकती है। यह कदापि नहीं हो सकती है, यह एक वाहियात बात है।

मैं निवेदन करना चाहता हूं कि सीता को याद किया जाये। शम्बूक की तरफ आप ध्यान दें, उसे मार दिया गया था और इसलिये मार दिया गया था कि वह कर्मकाण्डी करता था। यह भी तर्क दिया जाता है और कहा जाता है कि हिन्दी या दूसरी जो भाषायें हैं, वे जंगली भाषायें हैं और जो संस्कृत भाषा है, वह बड़ी सुसंस्कृत और सभ्य भाषा है। मैं निवेदन करना चाहता हूं कि हिन्दुस्तान में जनतंत्र को चलाना है, लोकतंत्र को चलाना है तो लोक भाषा को हमें ग्रहण करना ही पड़ेगा और जब तक उस भाषा को आप नहीं अपनायेंगे, यह चीज चल नहीं सकती है, यह असम्भव है।

राष्ट्रपति जी ने भी इसके बारे में कुछ कहा है। उनकी क्या बात करनी हुई? वह तो बालिग मताधिकार के भी खिलाफ हैं और उसके खिलाफ उन्होंने अपनी राय दी थी कि यह नहीं होना चाहिये। वह तो पुरानी संस्कृति को कायम रखना चाहते हैं। उन्होंने तो ब्राह्मणों के पांव धोये थे. . . .

Mr. Speaker: Order, order. Nobody quote the President.

श्री यादव . मैं राष्ट्रपति जी का कह कर डा० राजेन्द्र प्रसाद कहे देता हूं। इस में तो कोई आपत्ति की बात नहीं है।

Mr. Speaker: The hon. Member will kindly hear me. Nobody is entitled to quote the President's opinion here for or against any particular point that is being discussed.

Shri B. K. Gaikwad (Nasik): Yesterday it was quoted.

Mr. Speaker: I am sorry, it ought not to have been done, because, *under the rules—hon. Members will* kindly read the rules again—the President ought not to be brought in for any discussion one way or the other. Anyhow if it has been done, possibly it has been inadvertently allowed. I do not want any reference to be made to the Rashtrapati. He is above all this.

श्री यादव : अध्यक्ष महोदय, मैं यह कह रहा था

Mr. Speaker: Order, order. The hon. Deputy-Speaker who was in the Chair has referred to it. I am reading from the proceedings of yesterday. The hon. Deputy Speaker said:

> "The President's name should not be used to influence the debate.
>
> Shri Panigrahi may also have three or four minutes".

Shri M. C. Jain was evidently referring to the President, and the hon. Deputy-Speaker said that the President's name ought not to be brought in for the purpose of the argument.

श्री यादव : मैं यह कह रहा था कि जो इतना प्रेम अंग्रेजी और संस्कृत से करते हैं उनके अन्दर एकाधिपत्य की भावना है। मैं आपको यह भी बतलाना चाहता हूं कि १९५६ में पिछड़े वर्ग

आयोग की रिपोर्ट आई थी, लेकिन चूंकि उससे एकाधिपत्य टूटता है, इस वास्ते आज तक उस की सिफारिशों को लागू नहीं किया गया और लागू करने की बात तो दूर रही, उस पर यहां बहस करने तक का अवसर नहीं दिया गया । इससे साफ ज़ाहिर होता है कि एकाधिपत्य कायम रखने की भावना इस सब चीज़ के पीछे काम कर रही है ।

मैं निवेदन करना चाहता हूं कि अगर आप चाहते हैं कि जनतंत्र पनपे, तो लोक भाषा को आपको अपनाना होगा । मैं नहीं चाहता कि यहां पर विदेशी भाषा रहे और अगर छिप कर काम न किया गया या कोई साज़िश न की गई तो हिन्दी देश की राष्ट्रभाषा बन कर रहेगी । साज़िश के बावजूद भी मैं समझता हूं कि वह राष्ट्रभाषा बन कर रहेगी । तमिल, बंगला, गुजराती आदि जितनी भी भाषायें हैं, जोकि हिन्दी की बहनें हैं, वे हिन्दी को अवश्य स्थान देंगी ही । मैं माननीय सदस्यों से कहना चाहूंगा कि आओ हम कोशिश करें भले ही आज तमिल हो जाये, बंगला हो जाये या कोई और भाषा हो जाये लेकिन अंग्रेज़ी को तो खत्म करें और अंग्रेज़ी को खत्म करके उसकी जगह संस्कृत को तो न दो ।

Mr. Speaker: The hon. Member must conclude now.

श्री यादव : एक दो मिनट में खत्म किये देता हूं । मेरा सारा समय इंटरपशंस में चला गया है ।

मैं कहना चाहता हूं कि एकाधिपत्य की भावना नहीं होनी चाहिये । यहां पर अनिवार्य रूप में विद्यालयों में पढ़ाने की बात की जाती है, डा० काटजू की बात की जाती है, संस्कृत विद्वानों का नाम लिया जाता है । मैं समझता हूं कि यहां पर विचित्र ढंग से लोकतंत्र चल रहा है और लोकतंत्र के विपरीत बात करने वाले लोग भी हैं । हमारे डा० सम्पूर्णानन्द जी ने तो यहां तक कहा है कि जब तक पंचवर्षीय योजनायें समाप्त न हो जायें, तब तक चुनावों को ही समाप्त कर दिया जाये । एक अजीब बात उन्होंने कही है और उनके बारे में यह कहा गया है कि वह संस्कृत के पक्षपाती हैं । इस प्रकार से एक विपरीत धारा ही हमारे देश में चल रही है । हम देख रहे हैं कि इस सदन की गैलरी में लोग आ कर बैठते हैं और कार्रवाई को सुनते हैं । मैं उन की बात नहीं करता हूं जो टाई, सूट बूट पहनते हैं, मगर उन द्विजों की बात करता हूं जो पिछड़े हुए हैं, गरीब हैं, धोती बांधते हैं, उनकी बात नहीं करता हूं जो सफेद फूल लगा कर आते हैं . . .

एक माननीय सदस्य : लाल फूल ।

श्री यादव : वे यही समझते हैं कि अपने घर में रहते हुए वे इसके मालिक नहीं हैं, अपने देश में वे बेगाने हैं क्योंकि लोक कार्यक्रम, हिन्दुस्तान की सरकार का सारा काम काज अंग्रेज़ी में चलता है । आज जब ऐसी बात है तो फिर संस्कृत की बात कैसे चल सकती है । जिस तरह से देहात के लोग ओझा की बात को नहीं समझते हैं, उसी तरह से. . . .

अध्यक्ष महोदय : दोनों भाषायें बराबर हैं ।

श्री यादव : अंग्रेज़ी और संस्कृत आज हिन्दुस्तान की सामन्ती भाषायें हैं, सामन्तवाद को कायम रखना चाहती हैं, और गरीबों को छुटकारा दिलाना नहीं चाहती हैं और उन को दूसरे लोगों के चंगुल में बांधे रखना चाहती हैं ।

Shri Raghunath Singh: He has taken 18 minutes. Others were allowed only 10 minutes each.

श्री यादव : मैं अभी खत्म किये देता हूं ।

मगर मैं साथ साथ यह भी कहना चाहता हूं कि संस्कृत को अगर कोई ज्ञान के लिए पढ़ना चाहता है तो मेरा यह विचार है, कि उस पर रोक नहीं लगनी चाहिये लेकिन मैं समझता हूं कि उसको एक अनिवार्य विषय बनाना विद्यार्थियों पर बोझ डालना होगा

[श्री यादव]

और उनके साथ अन्याय करना होगा और यह उसी विचारधारा का प्रतीक होगा जोकि आधिपत्य को कायम रखना चाहते हैं। यह बात मैं समझता हूं कि साजिश का ही एक भाग है।

एक और खतरे की ओर मैं आपका ध्यान खींचना चाहता हूं। उत्तर भारत में और खास तौर पर उत्तर प्रदेश के लियाकत अली खां ने पाकिस्तान बनवाया और आज उत्तर भारत से ही जा करके दक्षिण की पोषाक धारण करके राजाजी वहां के गरीबों में जो अंग्रेजी नहीं जानते हैं, संस्कृत व अंग्रेजी की वकालत करके हिन्दुस्तान का बटवारा चाहते हैं। मैं यह बात संकेत के तौर पर कह रहा हूं। इस वास्ते मैं इतना ही निवेदन करना चाहता हूं कि अगर देश को बचाना है तो तत्काल अंग्रेजी को खत्म करना होगा और संस्कृति को राष्ट्रभाषा या अनिवार्य विषय बनाने की कोशिश को त्यागना होगा।

Mr. Speaker: How many more hon. Members want to speak?

Some Hon. Members *rose*—

Pandit K. C. Sharma (Hapur): I want only five minutes.

श्री रघुनाथ सिंह अध्यक्ष महोदय, पांच सज्जनों के भाषण हुए हैं और १३ माननीय सदस्यों से भी अधिक सदस्य थे जिन को मौका देने का वचन दिया गया था।

Mr. Speaker: We agreed to sit till 6.30 P.M. today. I thought of calling the hon. Minister now and giving him 20 minutes. But if the House agrees, we can discuss it tomorrow also for an hour or an hour and a half. I have no objection

Some Hon. Members: Yes:

स्वामी रामानन्द शास्त्री (बाराबंकी—रक्षित—अनुसूचित जातियां) अध्यक्ष महोदय, मैं आपका बड़ा आभारी हूं कि आपने मुझे इस विषय पर बोलने का अवसर प्रदान किया है।

मैं आपका अधिक समय नहीं लेना चाहता हूं। संस्कृत के विषय में माननीय सदस्यों ने भिन्न भिन्न विचार प्रकट किये हैं और उसी के सम्बन्ध में मैं भी दो चार बातें कहना चाहूंगा। कुछ लोग कहते हैं कि संस्कृत के अन्दर बहुत उदारता है, कुछ कहते हैं कि उसके अन्दर संकुचित वृत्तियां हैं। इन दोनों बातों के बारे में बहुत सी चीजें आपके सामने पेश की गई हैं। यह बात ठीक है कि बीच काल में जिस प्रकार की बातें संस्कृत में आईं, वे ऐसी थीं कि बहुत ही खेदजनक थीं। यदि कोई शूद्र वेद पढने जाता था तो उसके कान में सीसा गला कर डाल दिये जाने तक की बात हो जाती थी। लेकिन उस के बाद ऋषि दयानन्द जैसे महापुरुष आये। उन्होंने यह भी बता दिया कि वेदों को पढने का अधिकार मनुष्य मात्र को है जो पागल नहीं है। उन्होंने यों कहा.

"यदेमां वाचं कल्याणीमावदानी जनेभ्य ब्रह्मराजन्याभ्यां, शूद्राय, चार्याय चारणा च॥"

यजुर्वेद के २६ अध्याय में यह मंत्र है। उस में कहा गया है कि वेद की वाणी को मनुष्य मात्र को पढने का अधिकार है, चाहे वह शूद्र हो, अतिशूद्र हो, मजदूर हो चाहे वह कोई भी काम करता हो। लेकिन यदि वह पागल है, उस को बुद्धि समझने लायक नहीं है, तो वह नहीं पढ सकता। पागल नहीं है तो पढ़ सकता है वरना नहीं। हमारे पूर्व वक्ता महोदय ने कुछ बातें कहीं। लेकिन बात तो यह है कि राजा भोज ने जिस वक्त ऐलान किया कि अगर मेरे राज्य में कोई संस्कृत नहीं जानता है तो वह इस राज्य से चला जाय उस वक्त ऐसे आदमी को लोग ढूंढने निकले तो एक कुम्भकार मिला, जिस को कुम्हार कहते हैं, वह उस समय

अपने घड़े बना रहा था। उस वक्त कहा गया कि यह तो शूद्र है और सस्कृत ब्राह्मणो की भाषा है, इसलिये यह जरूर संस्कृत नही जानता होगा, इसे निकाल दिया जाय तो उस ने एक श्लोक पढ कर सुनाया

'व्याकरण करण लिपिशास्त्र
वेदपुराण पुरन्दर जालम्।
सर्वमिद विदुशामशनाथ तेन
धमामि धमामि धमामि"

वह कुम्हार कहता है कि व्याकरण, ज्योतिष, गणित, वेद, पुराण और इद्रजाल यह सब विशेषत विद्वानो की चीजे है, उन सब को मै जानता हू। लेकिन मै अपने उदर पूर्ति के लिये धमामि, धमामि, धमामि। मै इस चक्र को चलाता हू और अपने घडे बनाता हू। जब यह स्थिति थी तो हम कैसे कह सकते है कि वह सब की भाषा नही थी ? दूसरी जगह चलते है तो एक जुलाहा कपडा बुन रहा था। उस वक्त उन्होने कहा कि यह जुलाहा जो है उस को निकाल दिया जाय, क्योकि यह कवि नही है। वह जुलाहा एक श्लोक पढ़ता है। वह कहता है।

"काव्य करोमि नहि चारुतर करोमि
यदि यत्नात् करोमि चारुरत करोमि।
भूपाल पूत्रमणिमण्डित पाद पीठाहि
साहसाध कवयानि वदामि यामि।"

वह कहता है मै कविता करता हू और अगर उस में 'क' निकाल दो क्यामि रह जाता है यानी मै बुनता हू और यदि उस में से 'व' भी निकाल दो तो यामि रहेगा यानी जाता हू। उस ने किस प्रकार से एक श्लोक के अन्दर इस भाव को रक्खा। तो मै यह कहना चाहता हूं कि अभी पिछले दिनो जब बुल्गानिन साहब आये तो रूस के जो अनुवादक थे उन्होने रूसी भाषा का हिन्दी में अनुवाद किया। मै भी संस्कृत जानता हू, मै ने शास्त्री बनारस में ही पास किया है। आप वैज्ञानिक शब्दो के लिये संस्कृत को सब से समीप पायेंगे। मेरे कहने का मतलब यह है कि अगर आप हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाते हैं तो आप सस्कृत का सहारा लिये बिना वैज्ञानिक शब्द नही निकाल सकते। हमारे यहा व्याकरण इतनी विशाल चीज है जिस से हम दुनिया भर के शब्द बना सकते है। बहुत से शब्द हमारे यहा रूढ़ि के रूप में आ गये है जैसे स्टेशन है या मास्टर है। मास्टर शब्द हिन्दी का नही है, यह अग्रेजी का है और हिन्दी में रूढि के रूप में आ गया है। इसी तरह से सिफारिश है। सिफारिश शब्द हमारा वही है लेकिन हम ने उसे मान लिया है। ऐसे शब्दो को तो हम मान ही लेंगे। मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि हम सस्कृत को जितना अधिक प्रोत्साहन देंगे उतनी ही हमारी राष्ट्रभाषा मजबूत होगी।

श्री खूपकार (सम्बलपुर) आप "सिफारिश" की सिफारिश करते हैं ?

स्वामी रामानन्द शास्त्री मेरा अभिप्राय यह था कि सिफारिश शब्द जो है वह उर्दू का होने हुए भी हम ने उस को हिन्दी मे स्थान दिया है। इसी प्रकार मास्टर शब्द जो है वह अग्रेजी का है लेकिन आम तौर पर लोग अध्यापक न कह कर मास्टर ही कहते हैं और उस को भी हम ने मान लिया है। इस प्रकार के बहुत से शब्द है जिन को हम ने हिन्दी में खपा लिया है तो अगर हम आज हिन्दी को राष्ट्र-भाषा बनायेगें और वैज्ञानिक शब्दों का अनुवाद उस मे करेगे तो उस में हम को संस्कृत का सहारा लेना ही होगा और इसलिये सस्कृत का पढना पढाना आवश्यक है।

एक और बात कह कर मैं समाप्त करता हू और वह यह है कि सस्कृत को बीच के काल में हम ने लोगो को पढने नही दिया। जैसा अभी मैं ने बताया अपने स्वार्थ में आकर हमने दूसरे आदमियो को उस को पढ़ने नही दिया और उस को डब्बे में बन्द रखने का प्रयत्न किया। हम ने खुद भी नही पढ़ा और दूसरों को भी नही पढ़ने

[स्वामी रामानन्द शास्त्री]

दिया । खुद भी हम गुलाम बन गये और इस प्रकार से भाषा का नाश किया । जैसा कहा गया और संस्कृत में कहीं कहीं है भी कि अगर शूद्र संस्कृत पढ़े तो उस के कान में सीसा डालो । जहां जहां पर ऐसे शब्द हैं संस्कृत की पुस्तकों में उन को कानून बना कर भारत सरकार को वहां से हटा देना चाहिये । पार्लियामेंट के अन्दर बिल ला कर, लोक सभा के अन्दर बिल ला कर के, ऐसे शब्दों और श्लोकों को जोकि संस्कृत की पुस्तकों में हैं उस को निकाल देना चाहिये । हमारे भारतीय संविधान की जो १७ वीं धारा है, जिस में कि अस्पृश्यता का अन्त किया गया है, उसे जड़ मूल से निकाल दिया गया है, उस के अनुसार हम को जो इस प्रकार के श्लोक आदि हैं उन को किताबों में से निकाल देना चाहिये । आज यह चीज बहुत आवश्यक हो गई है, नही तो आज संस्कार ऐसे बनते जायेंगे कि आगे चल कर इन श्लोकों को सामने रख कर, कानून की अवहेलना कर के लोग दूसरों के साथ छुआछूत का बरताव करने लगेंगे । इसलिये जरूरी है कि हमारे शिक्षा मंत्री महोदय इस बात का ध्यान रक्खें । यदि वह इस का ध्यान रक्खें तो मै सत्य कहता हूं कि आज कल जो छुआछूत गांवों में चल रही है वह समाप्त हो जायगी । आज देहातों में जो छुआछूत है वह बहुत प्राचीन काल से नही है । यह अधिकतर बीच के काल की है । खुद पुराने जमाने में हमारे ऋषि और मुनि लोगों को संस्कृत पढ़ाते थे । इस के अनेक उदाहरण हैं । सब से प्रसिद्ध उदाहरण तो सत्यकाम जावालि का है । वह पिप्पलादि ऋषि के पास संस्कृत पढ़ने गया । ऋषि ने उस से पूछा कि तुम्हारा गोत्र क्या है, तुम किस जाति के हो, तुम्हारे पिता का नाम क्या है ? उस ने कहा कि यह मैं स्वयं तो नहीं जानता, मै अपनी मां से पूछ कर आता हूं । वह मां से पूछने गया । मां ने कहा कि मै तो एक साधारण बरतन मलने वाली हूं । मुझे पता नही तुम्हारे पिता कौन हैं । उस बालक ने इसी प्रकार जा कर ऋषि से कह दिया कि मुझे बाप का नाम नहीं पता । ऋषि ने कहा कि चूंकि तुम्हारी मां का नाम जावालि है इसलिये मैं तुम्हारा नाम सत्यकाम जावालि रखता हूं, पिता का नाम नहीं मालूम तो न सही । और ऋषि ने उस को विद्याभ्यास कराया । मेरे कहने का मतलब यह है कि यह जो चीजें हैं वे बीच के समय की हैं । इसलिये जो इस प्रकार के श्लोक आदि आ गये हैं उन को संस्कृत में से निकाल देना चाहिये और नये प्रकार से सब चीजों को सामने रख कर कोर्स बनाया जाना चाहिये ।

इन शब्दों के साथ मैं जोरदार शब्दों में यह अनुरोध करूंगा कि सेन्टर में एक संस्कृत विद्यालय होना चाहिये और पिछले कमिशन ने या दूसरे कमिशनों ने जो रिपोर्टें दी हैं उन के अनुसार संस्कृत को बढ़ावा देना चाहिये । अभी राष्ट्रपति का जिक्र किया गया । मैं उन का जिक्र नही करना चाहता लेकिन यदि इस प्रकार की चीजें हैं तो उन के सम्बन्ध में अधिक न कह कर केवल आप से इतना निवेदन करना चाहता हूं कि इस प्रकार की जो बातें हमारे संविधान की धाराओं के प्रतिकूल हैं और यहां पाई जाती हैं उन को कानून बना कर निकाल दिया जाना चाहिये और इस के लिये यहां पर संशोधन बिल रखना चाहिये ।

श्री रघुनाथ सिंह : अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्यों ने केवल भारतीय दृष्टिकोण को इस सदन के सम्मुख प्रस्तुत किया है । मैं अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण से इस पर अपने विचार प्रकट करना चाहता हूं ।

आर्य जाति की आर्य भाषा संस्कृत है । यह भाषा कैसपियन सागर से ले कर पैसिफिक ओशन तक फैली हुई थी । इस के बोलने वालों में आर्यावजा अर्थात् ईरान, आर्यान अर्थात् अफगानिस्तान, आर्यावर्त

अर्थात् हिन्दुस्तान, कम्बोज अर्थात् पामीर, यानी भारत के वेस्ट साइड के जितने देश हैं उन सब की राष्ट्रभाषा संस्कृत थी। उन के शिलालेख संस्कृत में मिलते हैं क्योंकि उन की राष्ट्रभाषा संस्कृत थी। इसी तरह से पारसियों के आदिग्रंथ गाथा की भाषा एक प्राचीन वैदिक भाषा है, जिन्दअवस्ता की भाषा भी अपभ्रंश संस्कृत है। गाथा और जिन्दअवस्था की भाषा को नही समझा जा सकता अ.र संस्कृत व्याकरण का ज्ञान नहीं है। अब मैं आप को पूर्व की ओर ले चलना चाहता हूं। दक्षिण पूर्व एशिया में कम्बोज अर्थात् कम्बोडिया, चम्पा अर्थात् वियट नाम, स्वर्णदीप अर्थात् इंडोनेशिया, श्याम अर्थात् थाईलैंड, इन सब की राष्ट्रभाषा १२वी शताब्दी तक संस्कृत थी। अगर आप कहें तो मैं उस में से कोट कर के दिखा सकता हूं कि थाईलैण्ड, बर्मा, और कम्बोडिया के बीच में संधियां हुई है वे सब संस्कृत में ही हुई हैं। थाईलैण्ड, बर्मा और चीन के बीच मे गाधार और कौशाम्बी प्रदेश थे उन की राज्य भाषा संस्कृत थी। विएटनाम अर्थात् चम्पा, थाईलैण्ड अर्थात् श्याम, कम्बोडिया अर्थात् कम्बोज और स्वर्णद्वीप जिस में कि कर्मेरंग (निगोर), नग्नद्विप (निकोबार), वारुषक (सुमात्रा), वली (वाली), मलयद्विप (मलाया), कटाहद्विप (केदाह), वरुण द्विप (बोर्नियो) के देश हैं और इन का नाम संस्कृत वागमय में स्वर्णद्विप रक्खा गया है उन की भाषा संस्कृत थी। उन तमाम देशों की जोकि कैसपियन सागर से पैसेफिक सागर तक फैले हुए हैं उन की भी भाषा सस्कृत थी। जो महान् आर्य जाति एक छोर से दूसरे छोर तक फैली हुई थी उस महान् आर्य जाति की महान् भाषा संस्कृत थी। यही मैं आप को बताना चाहता हूं। इसी तरह दक्षिणी चीन में गांधार, कौशाम्बी आदि राज्य थे अर्थात् वर्तमान यूनान राज्य, इन राज्यों की राज भाषा भी संस्कृत थी। आज जो हमारे भाई यह कहते हैं कि संस्कृत को कभी किसी भी देश की राज भाषा होने का गौरव प्राप्त नहीं था उन को मैं बतलाना चाहता हूं कि कैसपियन सागर से पैसिफ़िक सागर तक फैले हुए देशों की राज भाषा संस्कृत थी और इन के होते हुए आज हम किस मुह से यह बात कह सकते हैं कि संस्कृत भाषा राज भाषा होने के योग्य नही है या संस्कृत में कभी कोई भाषण नहीं देता था या कोई संस्कृत नहीं बोलता था। यह ठीक है कि जब अरब में इस्लाम उठा और जब अरबी आई तो उस के साथ आर्यावैजा ईरान हो गया, आर्याना अफ़गानिस्तान हो गया, कम्बोज पामीर हो गया और हमारा आर्यावर्त हिन्दुस्तान हो गया। यह ठीक है कि जब इस्लाम का झंडा ऊंचा उठा और अरबी का प्रचार हुआ, फ़ारसी का प्रचार हुआ तो लोगों ने हिन्दू धर्म को त्याग दिया, आर्य धर्म को त्याग दिया और उसी के साथ साथ अपनी संस्कृत भाषा को छोड़ कर अरबी और फ़ारसी को अपनाना शुरू कर दिया। निरन्तर संस्कृत का ह्रास होता गया। आज मैं ललकार कर कहना चाहता हूं कि संस्कृत समस्त आर्यों की आदि भाषा है। लैटिन, स्लेव, लुथैनियन यह भाषाएं कहा से आईं? मैं आप को बतलाना चाहता हूं कि इन भाषाओं का रूट भी संस्कृत में है। जितने भी आर्य लोग अमरीका, आस्ट्रेलिया अथवा न्यूजीलैण्ड, यूरोप, अफ्रीका में हैं उन की मूल भाषा संस्कृत भाषा ही थी। संसार में जहां जहां भी आर्य जाति के लोग हैं उन की मूल भाषा संस्कृत थी। उन की जाति एक थी। धर्म एक था। उन की भाषा एक थी। वे बिखर गये। उन की भाषा बिगड़ी फिर भी जिन में आर्यन लोग है उन की मातृभाषा की रूट संस्कृत में है।

श्री यादव ने कहा कि संस्कृत तो सामंतों की भाषा थी। मै स्पष्ट रूप से इस की घोषणा करना चाहता हूं कि संस्कृत कदापि भी सामन्तों की भाषा नहीं थी। संस्कृत जनता

[श्री रघुनाथ सिंह]

की भाषा थी । आज भी अगर आप ताम्र-पत्रों और शिलालेखों को देखें तो आप को पता चल जावेगा कि जिस तरह आज हिन्दी अथवा उर्दू में रहननामे और बयनामे लिखे जाते हैं प्राचीन काल में संस्कृत में इसी तरह के रहननामे और बयनामे लिखे जाया करते थे । पुराने जमाने में संस्कृत भाषा में ही तमाम सेल डीड्स वगैरह लिखे जाते थे । वह जनसाधारण के प्रयोग में आने वाली भाषा थी । इसलिये मैं कहता हूं कि संस्कृत भाषा का स्थान बहुत ही ऊंचा है । डाक्टर श्री अणे साहब ने कहा है कि संस्कृत भारतवर्ष की तमाम भाषाओं की जननी है लेकिन मेरा तो कहना है कि संस्कृत केवल हिन्दुस्तानी भाषाओं की ही माता नहीं है बल्कि यह संसार में बसने वाले दो तिहाई अर्थात् ६० परसेंट लोगों की मातृभाषा की जननी है और आज वह जो वह भाषा बोलते हैं उस की रूट संस्कृत में ही है ।

मैं संस्कृत कमिशन के सम्बन्ध में कुछ शब्द कहना चाहता हूं । आयोग की रिपोर्ट को हम ने बहुत ध्यान से देखा । चूंकि समय कम है इसलिये मैं केवल दो, तीन बातें कहना चाहता हूं । अध्यक्ष महोदय आप जानते हैं कि सन् १७८१ में कलकते में वारेन हेस्टिंग्ज के समय में अरबी का एक मदरसा क़ायम हुआ था . . . .

Mr. Speaker: I think the hon. Member is likely to take some more time; he may continue tomorrow.

18.35 hrs.

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Thursday, May 7, 1959/Vaisakha 17, 1881 (Saka).